RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/261/2018-20/प्रकाशन तिथि 24 अप्रैल 2018

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका मई 2018

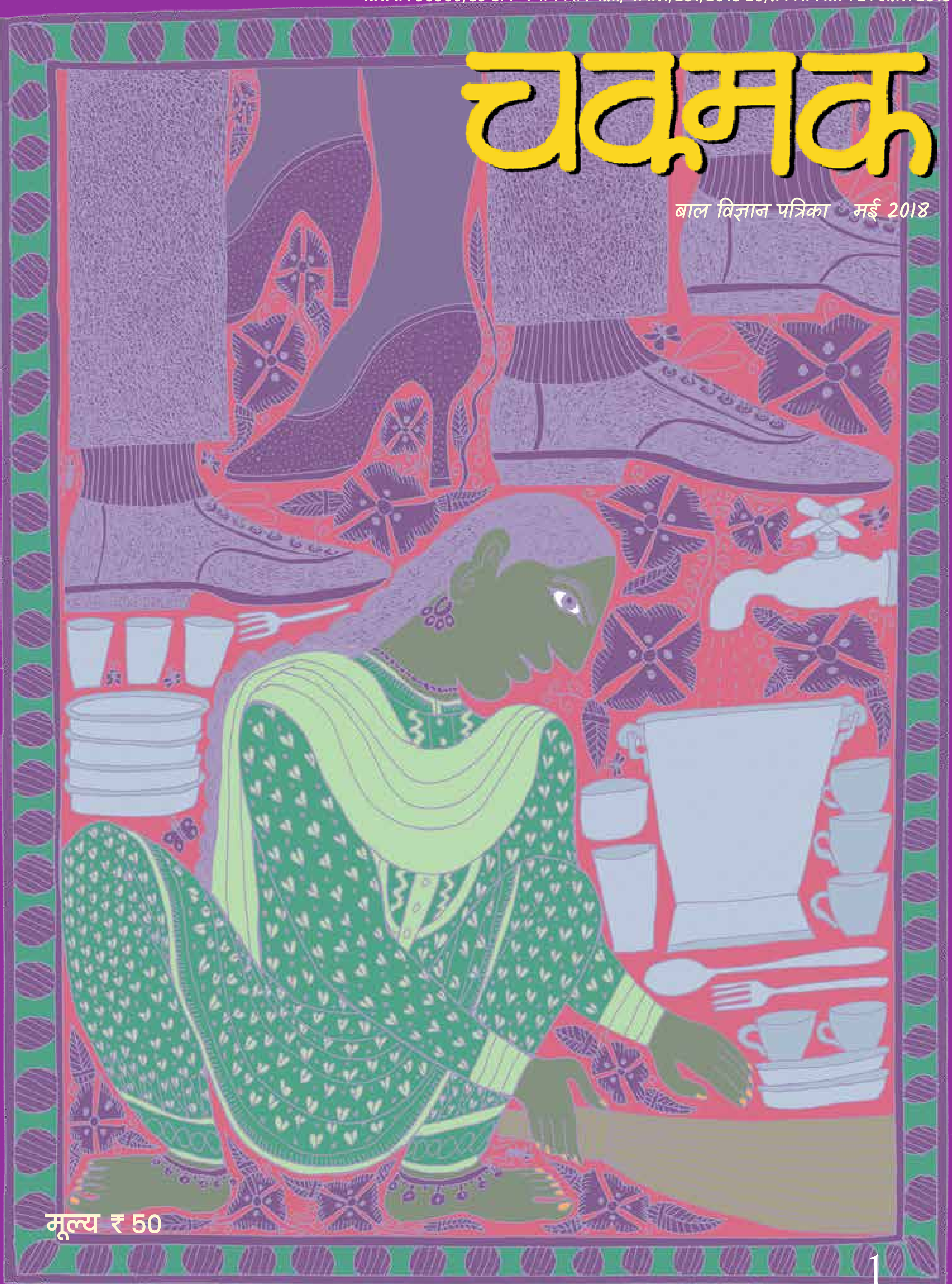

मूल्य ₹ 50

अंक 380 मई 2018
चकमक

चित्र: शुभम लखेरा

एक हलवाई जलेबी बेच रहा था मगर कह रहा था "आलू ले लो आलू!"

राहगीर: "लेकिन यह तो जलेबी है!"

हलवाई: "चुप हो जा वरना मक्खियाँ आ जाएँगी!"

इस बार

सतरंगी पर्वत	2
मेरा पन्ना	4
महुआ - दवंगरा	7
आदि और पोयम- रजनी द्विवेदी	11
गणित है मज़ेदार	12
भाई की बक-बक- भूमि	13
आज़ादी दो पहियों पर- सजिता नायर	15
शहद के छत्ते- वीरेन्द्र दुबे	18
गुब्बारों के साथ पाँच प्रयोग	20
कोयल के गीत- नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउंडेशन	22
परीकथाएँ और एक...- चित्रा विश्वनाथन	24
माचिस वाली नन्ही लड़की- हैंस क्रिस्टियन एंडरसन	26
काम और कामगार- सी एन सुब्रह्मण्यम्	28
तराशे आदमी की झोंपड़ी...- विनोद कुमार शुक्ल	31
मेरा पन्ना	36
माथापच्ची	41
चित्रपहेली	43
बन्दर- निरंकार देव सेवक	44

ये पर्वत दक्षिण अमेरिका के पेरु देश के एंडीस पर्वतमाला के हिस्से हैं। इसका स्थानीय नाम आसंगेट पर्वत है। चटक लाल, पीले, घेरुए, नीले और हरे रंग के चट्टानों के जमाव के कारण इन्हें इन्द्रधनुष पर्वत भी कहते हैं। ये समुद्र तल में जमे तलछट चट्टानों से बने हैं जो कभी ऊपर उठकर पर्वत बन गये।
अधिक ऊंचाई और दुर्गम रास्तों के कारण यहां पहुंचना बहत मुश्किल है। यहां के निवासी खानाबदोश पशुपालक हैं जो लामा नामक जानवर पालते हैं।

आवरण चित्र: कैरन हेडॉक

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

डिज़ाइन
कनक शशि

सम्पादकीय सहयोग
सी एन सुब्रह्मण्यम्
कविता तिवारी
सजिता नायर

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

वितरण
झनक राम साहू

सहयोग
कमलेश यादव
ब्रजेश सिंह

एक प्रति : ₹ 50
वार्षिक : ₹ 500
तीन साल : ₹ 1350
आजीवन : ₹ 6000
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं। एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल, म.प्र. 462 016, फोन: (0755) 4252927, 2550976, 2671017 फैक्स: (0755) 2551108 email - chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in; www.chakmak.eklavya.in, www.eklavya.in

मेरा पन्ना

मन की चलती

मम्मी-पापा मुझको डाँटें
क्योंकि गन्दे मार्क्स मुझे हैं आते
लेकिन इसमें मेरी नहीं गलती
मेरी नहीं मेरे मन की चलती
साल भर सोचता हूँ लास्ट वीक पढ़ूँ
लास्ट वीक सोचता हूँ लास्ट डे पढ़ूँ
लास्ट डे सोचता हूँ रात में पढ़ूँ
रात को सोचता हूँ बस में पढ़ूँ
बस में सोचता हूँ क्लास में पढ़ूँ
और क्लास में हो जाता है एग्जाम शुरू
अब आप ही बताओ, मैं क्या करूँ

-सृजन कुमार, सातवीं, किलकारी बाल भवन, पटना, बिहार

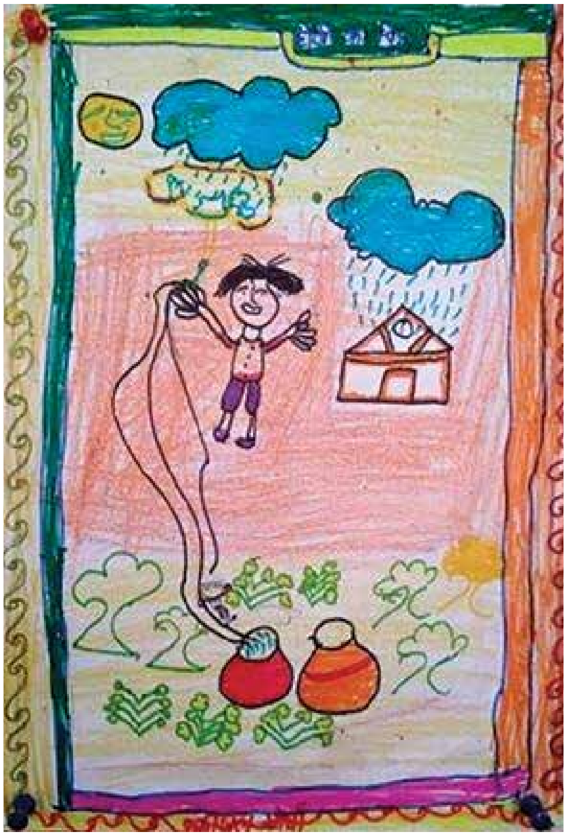

चित्र: काजल मौर्या, तीसरी, रा. प्रा. विद्यालय, रांगेर बस्ती, भंवारा, राजस्थान

चित्र: अमिकान्त, एलकेजी, सेंट मेरीज़ कान्वेंट स्कूल देवास, म. प्र.

चित्र: जिश्नु रतवाया, दूसरी, द हेरिटेज स्कूल, रोहिणी, नई दिल्ली

चलते चलो

चलते चलो
साथ में चलो
मिलकर चलो
कोई फँस जाए
तो उसकी मदद करो
फिर कोई देर न हो जाए
जल्दी चलो

-सौम्य शुभ्र, चार वर्ष, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड
(सौम्य ने यह कविता अपने पापा को सुनाई और उन्होंने लिखी है।)

मन्दिर!

मन्दिर! मन्दिर सुनते ही क्या लगता है? वो जगह जहाँ भगवान हो, एक पुजारी हो, गुम्बद हो और उसके भी ऊपर एक कलश जैसी आकृति हो, और जहाँ मीठा नारियल और शक्कर मिले। कुछ समय पहले मैं और मेरे दोस्त कुछ मन्दिरों को देखने गए। हम एक के बाद एक मन्दिर देख रहे थे। ऐसे में हमने पाँच मन्दिर देखे। उस रोज़ मुझे समझ आया कि हर मन्दिर में पुजारी, गुम्बद, कलश जैसी आकृति, प्रसाद, यहाँ तक कि दीवार भी होना ज़रूरी नहीं है। बस एक चबूतरा और एक ऐसी आकृति जिसे हम भगवान माने वही ज़रूरी है।

हम एक मढिया पर पहुँचे। वहाँ हमने देखा कि वहाँ एक चबूतरा है उस पर एक करंज का पेड़ था, और एक पत्थर था और उसके ऊपर एक शेड था। कोई गुम्बद, कलश जैसी आकृति नहीं थी। उसके बाद हम लोग श्री राम जानकी मन्दिर गए। वहाँ शिखर, गुम्बद और हर चीज़ जो एक मन्दिर में होनी चाहिए, थी। वह बिलकुल एक दरबार जैसा था। शायद राजा राम दरबार था।

-बिहू, आनन्द निकेतन डेमोक्रेटिक स्कूल, भोपाल

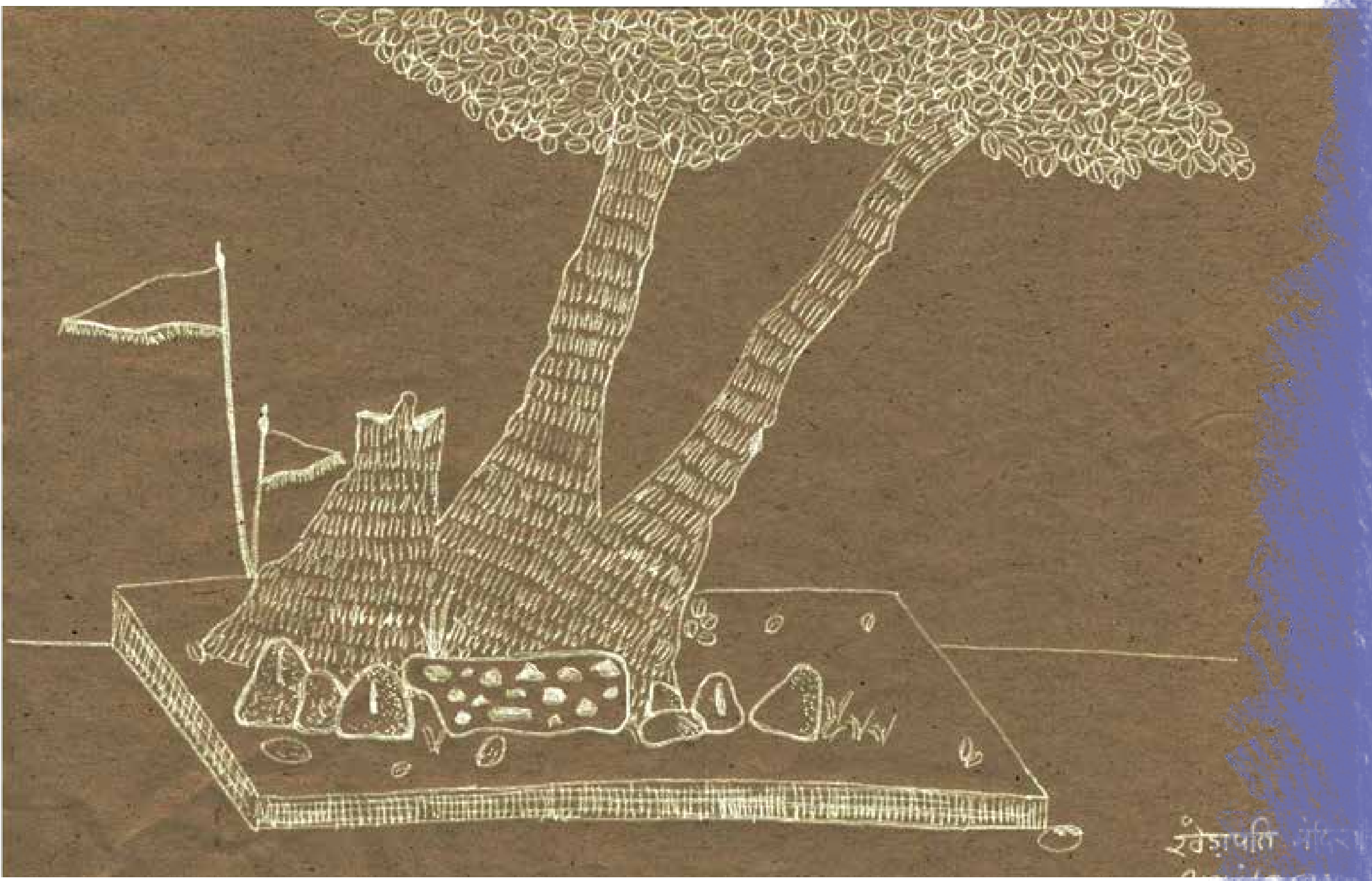

चित्र: अमृता यादव, भोपाल

महुआ, तुझे रोटी कहूँ कि पानी?

दवंगरा

महुआ मेरे लिए उस नए खिलौने जैसा था जो बच्चे को जब मिलता है तो वह उसको हर तरफ से ऊपर से नीचे तक जाँचता है, और उसको हर तरफ से मुँह में डालकर चखता है। चखो तो महुआ मीठा तो लगता है मगर इसकी गन्ध बहुत तेज़ होती है और हर किसी को नहीं भाती है।

केसला के गाँव भुमकापुरा में रहने वाले रोहित और दिशा मुझे महुआ बीनने सुबह-सुबह अपने साथ लेकर गए थे। दोनों ने मुझे महुआ बीनते-बीनते कई सारी मज़ेदार बातें बताईं। रोहित को इस साल जूते खरीदने हैं, तो कहता है "दीदी मैं जूते लेकर आऊँगा इनसे, इसलिए अपनी टोकरी अलग रखी है मैंने।" हरेक के लिए महुए का अलग-अलग अपना कुछ खास ही मतलब होता है।

रोहित ने मुझे बताया कि महुए के पेड़ के नीचे गिरी सूखी पत्तियों को आग लगा देते हैं जिससे महुआ गिरने की जगह साफ हो जाती है। एकदम जले काले फर्श पर जब हलके पीले फूल गिरते हैं तो लगता है कि आसमान में तारे उगे हैं। गिरे पड़े महुए आसानी से बिन भी जाते हैं। और फिर आग की गर्मी की वजह से महुआ ज़्यादा भी गिरता है।

इन फूलों को इकट्ठा करने का काम सुबह पाँच बजे शुरू किया जाता है। सुबह पाँच बजे मुर्गे की बाँग के साथ ही गाँव के सारे बच्चे उठ जाते हैं। बच्चे दो से लेकर छह, सात या आठ की टोली में हाथ में बाँस की टोकरी लिए निकलते हैं। कुछ के महुए के पेड़ उनके घर ही में होते हैं, और कुछ दूर जंगल में जाते हैं। और तुमको सुबह-सुबह अँधेरे में सिर्फ उन बच्चों की आवाज़ें आती हैं। कुछ दिखाई नहीं दे रहा होता। महुआ बीनने जाने का रास्ता सुबह सुबह एक अलग ही सुख देता है। यह सुबह होती है तारों से भरे आसमान की। असली सुन्दर सुबह। जब तुम महुए के पेड़ के नीचे बैठे होते हो दूसरी तरफ सुबह हो रही होती है। आसमान अपने रंग बदल रहा होता है और महुआ तुम्हारे चारों ओर टपक रहा होता है।

क्या तुमने महुए को देखा है? क्या उसे टपकते हुए सुना है? "टपकना" शायद सही ही कहते हैं वे लोग। सच में जब आसपास महुए पेड़ से गिरते हैं तो टप-टप की आवाज़ ही आती है।

महुए को टपकने के लिए गरम मौसम की ज़रूरत होती है। अगर मौसम गरम होता है तो महुआ ज़्यादा टपकते हैं। ज़्यादा हवा और ठण्ड महुए के लिए बिलकुल भी अनुकूल नहीं होतीं है। केसला वासियों के अनुसार अगर महुए के मौसम में बारिश हो जाए या बिजली चमके तो महुए के फूलों की कलियाँ फट जाती हैं। तब फूल न तो खिलते हैं न ही टपकते हैं।

गोंड आदिवासियों की एक बहुत ही रोचक प्रथा है जिसमें उनके घर जब बच्चा पैदा होता है तब सबसे पहले उसे धरती पर सुलाया जाता है क्योंकि धरती उस बच्चे की पहली माँ है। फिर उसको महुआ खिलाया जाता है (महुआ और धरती दोनों ही उन आदिवासियों को पालते जो हैं)। उसके बाद ही बच्चे को उसकी माँ के पास सुलाया जाता है। तो बचपन से महुआ उस बच्चे से जुड़ जाता है और उसके जीवन का मुख्य भाग बन जाता है।

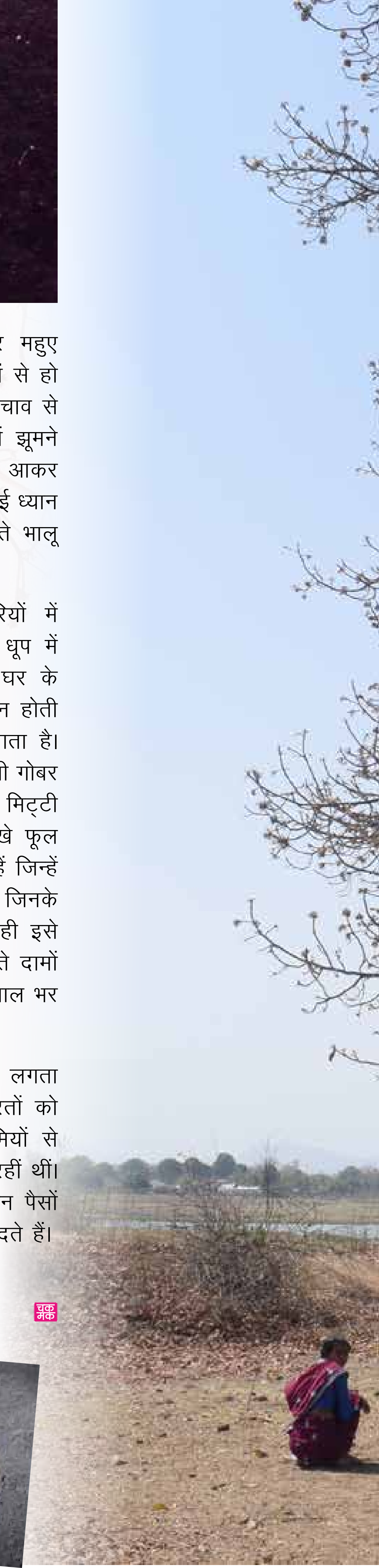

महुए के फूल आदिवासियों के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण चीज़ है। इससे उनके पूरे साल का इन्त-ज़ाम होता है। महुए का भण्डारण करके रखते हैं ताकि जब भी खाने की कमी पड़े तो महुए की मदद से आपदा से उबर लेते हैं। महुए से कई प्रकार के व्यंजन बनाए जाते हैं। इसको भूनकर भी खाया जाता है। इसके फूलों को आटे में गूँथकर पूड़ियाँ तली जाती हैं और इसके लड्डू भी बनते हैं। महुए से नगदी कमाई भी हो जाती है। महुए को सुखाकर बेचते हैं। खरीदने वाले व्यापारी इसे शराब बनाने वालों को बेचकर मुनाफा कमाते हैं। वैसे नालों के किनारे अकसर महुए की दारू की भट्टियाँ देखी जा सकती हैं। बहुत संघर्ष के बाद आदिवासियों ने अपने उपयोग के लिए महुए की शराब बनाने का अधिकार पाया है। लेकिन वे भी शराब का व्यापार नहीं कर सकते हैं।

मार्च और अप्रैल की सारी बातें महुए से शुरू होती हैं और महुए पर ही खतम होती हैं। चाहे वो स्कूल में न आने की बात हो या किसी परिवार के घर पर न होने की। सबका कारण महुआ ही होता है। सुबह पाँच बजे बच्चे निकलते हैं फिर नौ या दस बजे तक खाना लेकर उनकी माँ आ जाती हैं। सुबह जल्दी जाने की दरअसल कई वजह हैं – पहली यह कि रात भर जो महुआ गिरा हुआ होता है उसे एक साथ बड़ी संख्या में बीन लिया जाता है। दूसरी यह कि सुबह-सुबह जाकर उसकी निगरानी भी की जाती है ताकि कोई मवेशी फूलों को न खा जाए। तीसरी यह कि कोई और दूसरा तुम्हारे महुए न बीन ले। ये पेड़ भी लोगों के खरीदे हुए होते हैं। जो पेड़ जिसने भी खरीदा है वो उस पेड़ के ही महुए बीनेगा। महुए बीनने का कार्यक्रम दिन भर चलता रहता है। एक ही पेड़ के नीचे एक दिन में करीब दस चक्कर लगते हैं।

महुए के मौसम में अकसर महुए बीनने वालों का सामना भालुओं से हो जाता है। भालू महुए को बहुत चाव से खाते हैं और खाते ही नशे में झूमने लगते हैं। कभी-कभी गुस्से में आकर लोगों को नोच भी लेते हैं। तो भई ध्यान रखना, कहीं महुआ बीनते-बीनते भालू का सामना न हो जाए।

महुए को बाँस की टोकरियों में भरकर लाते हैं और घर पर धूप में सुखाते हैं। भुमकापुरा में हर घर के बाहर गोबर से लिपी हुई ज़मीन होती है जिस पर महुआ सुखाया जाता है। लोग अपने-अपने पेड़ों के नीचे भी गोबर से लीप देते हैं ताकि फूलों पर मिट्टी न लगे और वो साफ रहें। सूखे फूल भूरे या काले रंग के हो जाते हैं जिन्हें बोरियों में भरकर रखा जाता है। जिनके पास साधन कम हैं वे तुरन्त ही इसे व्यापारियों को बेच देते हैं, सस्ते दामों में। बाकी ज़रूरत के अनुसार साल भर थोड़ा-थोड़ा बेचते रहते हैं।

तामिया में हर शुक्रवार हाट लगता है जिसमें मैंने बहुत सारी औरतों को महुआ बेचते हुए देखा। आदमियों से ज़्यादा वहाँ औरतें महुआ बेच रहीं थीं। बच्चे भी बेचने आते हैं और उन पैसों से अपनी पसन्द की चीज़ें खरीदते हैं।

फोटोग्राफ: दवंगरा

महुए से कुछ व्यंजन

तामिया के पास के गाँव बखारी में रहने वाले महेश ने बताया कि उनके यहाँ महुए से लचका बनता है जो कि एक तरह का मीठा दलिया होता है। उसने मुझे और भी कई व्यंजनों के बारे में बताया जो वे लोग महुए से बनाते हैं। मैं यही सोचती रही कि शहरों में आइसक्रीम या पिज्जा में महुआ क्यों नहीं डल सकता है। है न मज़े की बात!

बखारी में महेश के घर में मैंने इन व्यंजनों को बनते देखा और चखा भी। तुम भी ट्राई कर सकते हो।

(1) लचका- बल्लर या मसूर की दाल को अच्छे से उबाला जाता है। इस बीच ताज़े महुए के फूलों को साफ किया जाता है और उसकी पंखुड़ियों के उपरी हिस्सों व पुंकेसरों को हटाया जाता है। फिर इसे अच्छे से धोकर निथारा जाता है। फिर इसे उबली दाल में मिलाकर उबाला जाता है। तब तक जब तक वह गाढ़ा न हो जाए। उसके बाद इसे दूध, दही या छाछ के साथ खाया जाता है।

(2) कोया- महुए के फूलों को साफ करके मिट्टी के तवे पर भूना जाता है। फिर जलते हुए कोयलों को तेल में डुबोकर बुझाया जाता है और जब वह धुआँ छोड़ने लगते हैं तो उन्हें एक बर्तन में डालकर उस पर भुना महुआ डाला जाता है। फिर उसे ढक्कन लगाया जाता है। धुआँ दिए महुए का स्वाद ही निराला होता है।

महुए का परागन

महुआ उन फूलों में से है जो रात को खिलते हैं। ये अगले दिन की सुबह तक गिर भी जाते हैं। अगर तुम इनके फूलों को ध्यान से देखोगे तो तुम्हें मोटी रसीली पंखुड़ियों से बाहर निकलती हुई एक लम्बी-पतली गर्भकेसर दिखेगी। और फूल को काटकर देखोगे तो अन्दर पंखुड़ियों से चिपके पुंकेसर दिखेंगे। गर्भकेसर के सिरे पर जब परागकण चिपकते हैं तो नलियों के ज़रिए वे फूल के अण्डों तक निषेचन के लिए पहुँचते हैं। लेकिन पंखुड़ियों के अन्दर लगे हुए पुंकेसर के परागकण बाहर तक पहुँचते कैसे हैं?

महुए के लम्बे गर्भकेसर और फूल से झड़ते परागकण

महुआ फूल के अन्दर पुंकेसर

कहते हैं कि इसमें हवा कुछ मदद कर देती है। हवा पर सवार परागकण अपने फूलों के गर्भकेसर के अलावा दूसरे फूलों और यहाँ तक कि दूसरे पेड़ के फूलों तक पहुँच जाते हैं। फिर जानवर भी कभी मदद कर देते हैं। चमगादड़ जब गुच्छों से फूल तोड़ते हैं तो पुंकेसर गर्भकेसर के ऊपर से होते हुए निकल जाते हैं। चमगादड़ पर भी कुछ परागकण चिपक जाते हैं जो अगले महुए के फूल पर चिपक जाते हैं। कुछ लोगों का मानना है कि मधुमक्खी और अन्य छोटे कीट भी परागन में मदद करते हैं।

महुए के फूल इतने मीठे क्यों?

महुए के सूखे फूलों के वज़न का 60-70 प्रतिशत भाग तो शक्कर होगा। यह फूलों की दुनिया में सामान्य नहीं है। आमतौर पर जब ऐसा होता है तो कहते हैं कि यह कीटों, गिलहरियों, पक्षियों या चमगादड़ों के लिए इनाम हैं ताकि वे इन फूलों को खाने या इनके रस को पीने के चक्कर में इनका परागन भी कर दें।

कुछ सवाल

महुए रात को फूलते हैं और रात के समय पतिंगों के अलावा बाकी कीट तो निष्क्रिय ही रहते हैं। चमगादड़ दिख तो जाते हैं लेकिन बहुत सारे नहीं। तो सवाल यह है कि वास्तव में महुए का रस किस के लिए है और वह निषेचन में कैसे मदद करता है?
तो कभी महुए के पेड़ के नीचे रात बिताकर बताना तो कि उनके फूलों के मेहमान कौन-कौन हैं।

चित्र: जोहर ठाकुर, पाँचवी, सांगाखेड़ा, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश

आदि और पोयम

रजनी द्विवेदी

आदि अभी दो साल का हो रहा है। उसे कविता व गीत बहुत पसन्द हैं। कुछ याद भी हैं। एक दिन की बात है, आदि की माँ रसोई में खाना बना रही थीं। आदि भी पास बैठा था, बैठे-बैठे गाने लगा।

"पैसे पास होते तो चार चने लाते
चार में से एक चना घोड़े को खिलाते
घोड़े को खिलाते तो पीठ पर बिठाता
पीठ पर बिठाता तो बड़ा मज़ा आता।"

गाते-गाते उसे फ्रिज दिख गया -

"पैसे पास होते तो चार चने लाते
चार में से एक चना फ्रिज को खिलाते।"

अब सवाल था, "मम्मा, फ्रिज को खिलाते तो वो क्या करता?"

माँ, "कुछ नहीं करता, फ्रिज चने खाता है क्या?"

आदि, "अरे मम्मा! पोयम है ये, पोयम!"

माँ, "ठीक है। फ्रिज को खिलाते तो आइसक्रीम बनाता।"

आदि, "हाँ, आइसक्रीम बनाता तो बड़ा मज़ा आता।"

"अच्छा, पैसे पास होते तो चार चने लाते, चार में से एक चना इसको खिलाते।"

माँ, "इसको किसको?"

आदि, "अरे! ये है ना ऊपर, क्या बोलते हैं इसको?"

माँ, "एग्साज़्ट फैन।"

आदि, "हाँ, इसको खिलाते तो वो क्या करता?"

माँ, "अरे! ये खाता है क्या चने?"

आदि, "अरे मम्मा! ये पोयम है, पोयम।"

माँ को कुछ सूझा नहीं।

आदि फिर से गाने लगा, "पैसे पास होते तो चार चने लाते"

"चार में से एक चना (पानी के कंटेनर की तरफ इशारा करते हुए) इसको क्या बोलते हैं?"

माँ, "वॉटर कंटेनर।"

आदि, "कंटेनर को खिलाते तो वो क्या करता?"

माँ, "कंटेनर को खिलाते तो वो पानी पिलाता।"

आदि, "पानी पिलाता तो बड़ा मज़ा आता!"

गणित है मज़ेदार!

इन पन्नों में हम कोशिश करेंगे कि आपको ऐसी चीज़ें दें जिनको हल करने में मज़ा आए। ये पन्ने खास उन लोगों के लिए हैं जिन्हें गणित से डर लगता है।

1.

पिंगल का मेरु (पास्कल त्रिकोण)

आज से लगभग 2200 साल पहले तक्षशिला में (वर्तमान पाकिस्तान में) पिंगल नाम के एक विद्वान हुए। उन्होंने छन्द और काव्य पर एक किताब लिखी, जिसमें मुख्य चर्चा थी कि किसी कविता में कितने अक्षर, मात्रा व शब्द जमाए जा सकते हैं। शब्द और छन्द से खेलते-खेलते पिंगल ने संख्याओं का एक पैटर्न खोजा। इस पर बाद के कई गणितज्ञों ने काम किया और इसे 'मेरु प्रस्तार' या सीढ़ी नाम दिया।

1

1 1

1 2 1

1 3 3 1

1 4 .... 4 1

....

उनकी यह खोज ईरान के गणितज्ञों तक पहुँची, उन्हें भी इसमें मज़ा आया और वहाँ यह 'उमर खय्याम तिकोन' के नाम से जाना गया। चलते-चलते यह फ्रांस पहुँचा जहाँ ब्लेज़ पैस्कल नामक गणितज्ञ ने इस खेल को और आगे बढ़ाया। जैसे-जैसे वे इस तिकोन को बनाते गए उन्हें संख्याओं के कई नए रंग-रूप दिखने लगे। आधुनिक गणित में इसका नाम 'पास्कल तिकोन' पड़ा।

हम भी इस तिकोन का मज़ा ले सकते हैं। इस आकृति को देखो और पता करो कि लाल लकीर वाली खाली जगह में कौन-सी संख्या आएगी? ध्यान रहे कि यह संख्या चार नहीं है।

अगर यह संख्या तुम ने पहचान ली है तो अगली लाइन की संख्याओं को लिखो।

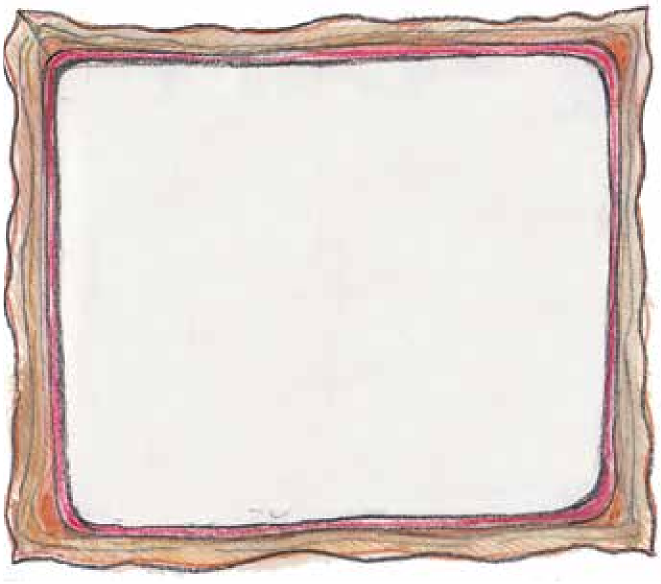

2.

एक परिवार

एक पुरानी फोटो है किसी परिवार की। उसमें 1 दादा, 1 दादी, 2 पापा, 2 मम्मी, 6 बच्चे, 4 पोते-पोतियाँ, 2 बहनें, 2 भाई, 3 बेटे, 3 बेटियाँ, 1 सास, 1 ससुर, 1 बहु... इतने सारे लोग हैं।

अब ज़रा गिनो कि कुल कितने लोग हुए?

लेकिन इस फोटो में तो आठ लोग ही दिख रहे हैं। 8 लोगों की इस फोटो में यह सभी रिश्तेदार कैसे शामिल हो सकते हैं?

भाई की बक-बक

भूमि

सिनेमा हॉल हमारे घर से दूर था। हम सड़क पर आकर खड़े हुए तो एक खाली ऑटो मिल गया। ऑटो वाले ने हमें गिना और हम चारों ऑटो में घुस गए। मैं, भाई और मम्मी पीछे बैठ गए और पापा ऑटो वाले के साथ आगे। हम पाँच मिनट में ही सिनेमा हॉल के सामने उतर गए।

अन्दर घुसते ही मैं और मेरा भाई हॉल को देखते ही रह गए। नई-नई चीज़ें थीं। खुले-खुले रूम थे, ए. सी. लगा हुआ था। हम यह सब देखकर हैरान थे। हम टाइम पर पहुँच गए थे। फिल्म बारह बजे शुरू होनी थी और वह मेरी मनपसन्द फिल्म *बाहुबली* थी।

फिल्म वाले हॉल में पूरा अँधेरा था और गोल-गोल सीढ़ियों के ऊपर बहुत सारी कुर्सियाँ लगी थीं, जिन पर सामने लगी स्क्रीन से रोशनी झर रही थी। ऊपर की तरफ जाकर हम भी बैठ गए। मैं भाई के साथ बैठी थी और पापा, मम्मी के साथ। पूरा हॉल धीरे-धीरे भरने लगा था। जैसे ही फिल्म शुरू हुई तो मेरा भाई मेरे कान में बोला, “तुझे पता है? सबसे पहले क्या होगा?”

मैंने बड़े प्यार और बेचैनी से पूछा, “क्या?” और उसे बड़े प्यार से देखने लगी। वह मुझे देखते हुए बोला, “क्यों बताऊँ? खुद ही देख ले।”

यह सुनकर मेरा दिमाग खराब हो गया। मैं बिना कुछ बोले फिल्म देखने लगी। अभी पूरी तरह से मेरा ध्यान फिल्म पर गया भी नहीं था कि वह फिर से बोल पड़ा, “जानती हो, इसके बाद क्या होगा?” मेरा ध्यान फिर से उसकी बातों पर चला गया। मैंने उससे कहा, “बता न! क्या होगा आगे?” वह बोला, “फिल्म देख! पता चल जाएगा।”

मेरा मूड खराब होने लगा था। मैंने गुस्से में कहा, “क्या भाई? चुप नहीं हो सकते क्या?”

हम आराम से फिल्म देखने लगे। मुझे बहुत मज़ा आ रहा था। सब कुछ बहुत अच्छा लग रहा था। फिल्म अभी थोड़ी ही निकली थी कि भाई फिर से मेरे कान में फुसफुसाया, “क्या देख रही हो? मैं बताता हूँ कि बाहुबली अब क्या करेगा?” “क्या करेगा?” मैंने बड़ी ही मासूमियत से उससे पूछा।

वह हँसता हुआ बोला, “मुझसे ही सुनना था तो इतने पैसे क्यों खर्च करवाए?”

यह सुनते ही मेरा दिमाग खराब हो गया। मैं मन ही मन सोच रही थी कि काश मैं मम्मी को यहाँ भेज दूँ और मैं उनकी सीट पर जाकर बैठ जाऊँ। यह सोचते हुए मैंने मम्मी की तरफ देखा भी मगर अँधेरे और खामोशी के कारण मैं उन्हें न तो ठीक से देख पाई और न ही बोल पाई। मगर मेरी समझ में आ भी नहीं रहा था कि उनसे मैं बोलूँ तो कैसे बोलूँ? मैं एक बार उठी भी मगर फिर चुपचाप अपनी सीट पर बैठ गई।

भाई फिर से बोला, “अब मैं सच में बताता हूँ कि क्या होगा?”

मैंने उसकी तरफ देखा और कहा, “चुप रह। कुछ नहीं होगा।”

मैंने मुँह नीचे कर लिया था। मैं उसके साथ बैठकर इतना पछता रही थी कि बता नहीं सकती। भाई ने फिल्म का पूरा मज़ा ही किरकिरा कर दिया था। मेरे दिमाग में बस यही चल रहा था कि फिल्म आधी होगी और मैं मम्मी के पास जाकर बैठ जाऊँगी। भाई की बक-बक पूरी तरह से चल रही थी। पापा और मम्मी तो अपने में लगे थे और फिल्म के मज़े ले रहे थे। पर मैं फँस गई थी।

फिल्म का इंटरवल हुआ तो, मुझे बहुत चैन मिला..

चित्र: कनक शशि

भूमि, चौदह साल। आठवीं कक्षा में पढ़ती है और दक्षिणपुरी, नई दिल्ली में रहती है। अंकुर संस्था की नियमित रियाज़कर्ता है।

आज़ादी दो पहियों पर

सजिता नायर

अंग्रेजी से अनुवाद - लोकेश मालती प्रकाश

आज हम लड़कियों के पास घूमने-फिरने के साधनों के कई विकल्प हैं बेशक समय और जगहों की पाबन्दियाँ हैं। लेकिन महज़ सौ साल पहले ये विकल्प बड़े सीमित थे। घूमने-फिरने और बाहरी दुनिया देखने के लिए साइकिल पहला उम्दा साधन था। साइकिल शुरुआत से ही आज़ादी और ज़िन्दगी का प्रतीक रही है। ज़िन्दगी की ही तरह साइकिल में भी सबसे महत्वपूर्ण होता है सन्तुलन बिठाना और औरतों के लिए ये उनके अपने सफर को सन्तुलित करने का एक मौका था। आयरिश मूल की लेखक व साइकिल चालक बीट्रिस ग्रिमशॉ ने 1890 के दशक में लिखा, "साइकिल मैंने बड़ी मुश्किल से खरीदी। किसी की मदद लिए बगैर मैं उसे मीलों चलाती थी, उन सरहदों के भी पार जहाँ तक तेज़ चाल में दौड़ते घोड़े जा सकते थे। समूची दुनिया मेरे कदमों में थी। और जैसे ही मेरा इक्कीसवाँ जन्मदिन आया मैं घर से निकल पड़ी, यह देखने कि बागी बेटियों के लिए इस दुनिया के पास क्या है।"

वह दिन मुझे अब भी याद है जब मेरी पहली साइकिल मुझे मिली थी। मैं तब पाँचवे दर्जे में थी और हाल ही में मैंने अच्छे नम्बरों से इम्तिहान पास किया था। और अच्छे नम्बरों का मतलब इतने अच्छे नम्बर कि नम्बरों पर फिदा रहने वाले मेरे अम्मा-पापा भी गर्व से फूले नहीं समा रहे थे। मैं हमारी बिल्डिंग के अहाते में अपने छह साल के पड़ोसी के साथ खेलने में मगन थी कि अचानक गेट पर एक ऑटोरिक्शा रुका। मेरी अम्मा उसमें से निकलीं और उनके पीछे पापा भी। फिर उन्होंने उसमें से रुपहले-काले रंग की बड़ी-सी लेडीबर्ड निकाली। अपने अम्मा-पापा से मिला वह ज़िन्दगी का पहला सरप्राइज़ था। कुछ ही दिन पहले, मैंने एक टूटता तारा देख साइकिल की कामना की थी। मुझे साइकिल से इतना प्यार क्यों था इसकी वजह मुझे याद नहीं, मगर मैं बड़ी शिद्दत से अपने लिए एक साइकिल चाहती थी। मेरे दोस्तों ने कहा कि टूटते तारे हमारी ख्वाहिशों को हकीकत में बदल देते हैं। मुझे नहीं पता कि यह उस टूटते तारे की वजह से था या इम्तिहान में अच्छे नम्बर लाने का कमाल कि मेरे अम्मा-पापा को मुझे साइकिल का तोहफा देना सूझा। नहीं तो तोहफे के नाम पर मेरे लिए उनको बस शतरंज, स्क्रैबल या बिज़नेस ही सूझते थे जो मेरा आइक्यू बढ़ाने में मदद करते थे। साइकिल उन बिरले तोहफों में से थी जो उन्होंने मेरे लिए बड़े ही अज्ञात कारणों से खरीदा। और सच कहूँ तो मुझे इसकी परवाह ही नहीं थी कि उन्होंने वह क्यों खरीदा। और परवाह करूँ ही क्यों जब मेरे सामने मेरी अपनी रूपहली-काली साइकिल खड़ी थी? बस दो हफ्तों में ही मैंने साइकिल चलाना सीख लिया। मैं अपनी प्रतिबद्धता, रोमांच और मेहनत के चरम पर थी। मेरे अम्मा-पापा आज भी उन दिनों को याद करते हैं जब मैं साइकिल चलाने के लिए सुबह बहुत ही जल्दी उठ जाती थी।

साइकिल पर घूमते हुए मुझे जो एहसास होता था उसे शब्दों में बयान करना मुश्किल है। ऐसा साइकिल के चलाने से होता था या ठण्डी हवा के कारण यह तो पता नहीं मगर मुझे उन्मुक्तता का एहसास होता था। जब मैं उस साइकिल पर बैठती आज़ाद महसूस करती। कुछ भी करने के लिए आज़ाद, कहीं भी जाने के लिए आज़ाद, कुछ भी होने के लिए आज़ाद। उस दौर में यही मेरी ज़िन्दगी की एकमात्र चीज़ थी जिससे मुझे आत्मविश्वास और आज़ादी महसूस होती थी। हो सकता है इसका कारण उन दो पहियों पर मेरा नियंत्रण हो जिन्हें मैं जहाँ चाहूँ वहाँ ले जा सकती थी। और अब मुझे उन काले कुत्तों से भी डर नहीं लगता था क्योंकि उनसे बचने के लिए मेरे पास मेरी साइकिल थी। साइकिल चलाते हुए मैं ज़ोर-ज़ोर से गाती थी ताकि मुझे यह महसूस हो कि अपनी कहानी की हीरो मैं ही हूँ।

एक लड़की होने के नाते ऐसा महसूस करने के मौके मेरे पास ज़्यादा नहीं थे। इसलिए इस मौके का मैंने भरपूर फायदा उठाया। मैं हमेशा साइकिल चलाने के बहाने खोजती रहती थी। चाहे पास की दुकान से कुछ खरीदना हो या पास के किसी रिश्तेदार के घर जाना हो। घर बैठने से ज़्यादा अच्छा मुझे साइकिल चलाना लगता था।

आश्चर्य की बात यह है कि मेरी अम्मा के बचपन में स्थिति ऐसी नहीं थी। वे साइकिल की सवारी कम ही कर पाती थीं और वह भी अपने पिता की नज़रों से छुपकर। इसकी वजह यह थी कि मेरे नाना लड़कियों के साइकिल चलाने के खिलाफ थे। मुझे बाद में पता चला कि उस पीढ़ी में दुनियाभर में बहुत सारे लोग ऐसा ही सोचते थे।

1890 के दशक में जब बीट्रिस ग्रिमशॉ ने साइकिल चलाना शुरू किया तब साइकिल चलाने का चलन भी नया ही था। संडे हैरल्ड में एक लेखक ने उसी दौर में लिखा, "मुझे लगता है कि अपनी पूरी ज़िन्दगी में जो सबसे भयानक चीज़ मैने देखी है वह है किसी महिला का साइकिल चलाना और वॉशिंगटन ऐसी महिलाओं से भरा हुआ है। पहले मुझे लगता था कि सिगरेट पीना वह सबसे बुरा काम है जो कोई औरत कर सकती है, मगर अब मैंने अपना विचार बदल लिया है।"

यह देखना कि एक औरत अपनी ज़िन्दगी की किसी चीज़ को अपने नियंत्रण में ले रही है बहुत सारे लोगों के लिए बेहद चौंकाने वाला रहा होगा। लेकिन इसके बावजूद दुनियाभर में ऐसी तमाम औरतें थीं जिन्होंने फैसला किया कि वे लोगों की नहीं बल्कि अपने दिल की सुनेंगी।

1896 में अमरीकी नागरिक अधिकार कार्यकर्ता सूज़न बी एन्थोनी ने लिखा, "साइकिल चलाने के बारे में मैं क्या सोचती हूँ यह बतलाती हूँ। मुझे लगता है कि औरतों को मुक्त करने में दुनिया की किसी भी चीज़ से ज़्यादा योगदान साइकिल का है। किसी महिला को साइकिल पर देख मैं खुशी से भर उठती हूँ। जैसे ही कोई महिला साइकिल की सीट पर बैठती है उसे आत्मनिर्भरता और आज़ादी का एहसास होता है। फर्राटे से चली जाती स्त्री, उन्मुक्त स्त्रीत्व की तस्वीर।"

जैसे ही साइकिल भारत पहुँची ढेरों पुरुष उसे चलाने लगे। शहरी इलाकों में भी महिलाओं को साइकिल चलाने में कुछ समय लगा और देहातों में तो और ज़्यादा। लेकिन एक बार जब यह सिलसिला शुरू हुआ तो थमा नहीं। यहाँ तक कि फिल्मों में भी नायिकाओं को साइकिल चलाते दिखाया जाने लगा। 1941 में बनी *खजांची* वह पहली हिन्दुस्तानी फिल्म थी जिसमें नायिका को साइकिल चलाते दिखाया गया। फिल्म के एक दृश्य में उसकी नायिका रामोला देवी और उसकी सहेलियाँ 'सावन के नज़ारे हैं' गाना गाते हुए साइकिल चला रही होती हैं। *खजांची* के बाद तो ढेरों फिल्मों में महिलाओं को साइकिल चलाते दिखाया गया।

पिछले सालों में साइकिल की जगह कारों और मोटरसाइकिलों ने ले ली है। हाल ही में जिस फिल्म में किसी औरत को साइकिल चलाते दिखाया गया वह थी *डीयर ज़िन्दगी*। फिल्म के

एक दृश्य में आलिया भट्ट और शाहरुख खान दोनों ही साइकिल चला रहे होते हैं और आलिया कहती है "मैं सिर्फ आज़ाद रहना चाहती हूँ।" फिल्म में इस दृश्य के अलावा सिर्फ एक 'लव यू ज़िन्दगी' गाना ही और है जिसमें आलिया साइकिल चला रही होती है। इन दृश्यों को देख बरबस ही किसी 'आज़ाद परिन्दे' की तस्वीर ज़ेहन में कौंध जाती है। फिल्म को देखते हुए मुझे लगा कि शाहरुख, जो एक मनोचिकित्सक हैं, उनको बहुत सोच-समझकर साइकिल रिपेयर करने वाला दिखाया गया है।

कुछ साल पहले राज्य सरकारों ने सरकारी हाई स्कूलों में पढ़ने वाली सभी लड़कियों को मुफ्त साइकिल बाँटना शुरू कर दिया। इससे उन लड़कियों के लिए भी तालीम हासिल करने के रस्ते खुल गए जो स्कूल दूर होने के चलते पढ़ाई बीच में ही छोड़ देती थीं। जहाँ शहरी इलाकों में बच्चे बस, कार, ऑटोरिक्शा, मोटरसाइकिल और स्कूटी पर घूमते नज़र आते हैं वहीं, देहातों में ज़्यादातर साइकिल पर या पैदल दिखते हैं। ग्रामीण इलाकों में घूमते हुए मैंने कितनी ही लड़कियों को साइकिल चलाते हुए अपने दोस्तों के साथ स्कूल जाते देखा है। उनके प्रफुल्लित चेहरे देखना बड़ा ताज़गी भरा लगता है।

पिछली दफा मैंने साइकिल तब चलाई जब मैं बेंगलूरु में पढ़ाई कर रही थी। मेरे कुछ दोस्त थे जो हॉस्टल से विश्वविद्यालय तक साइकिल से ही जाते थे। एक दिन मैंने अपने एक दोस्त से उसकी साइकिल चलाने के लिए माँगी। अदभुत् अनुभव था वह! समय के साथ मेरी साइकिल की जगह स्कूटी ने ले ली है और अब तो स्कूटी की भी जगह कार लेती जा रही है। मुझे ऐसा लगता है जैसे एक चीज़ से दूसरी चीज़ मेरी ज़िन्दगी का नियंत्रण मुझसे छीनती जा रही है। अपनी साइकिल के साथ मैं जिस दुनिया में थी वह अब याद आती है। समय-समय पर गाड़ी की सर्विसिंग कराने या हर तीसरे-चौथे दिन पेट्रोल भराने का झंझट ही नहीं था। मुझे सिर्फ उसकी चेन व टायर का खयाल रखना होता था लेकिन वह साइकिल मुझे स्कूटी या कार से ज़्यादा खुशी देती थी। मेरी ख्वाहिश है कि मेरी ज़िन्दगी भी ऐसी ही हो। दुश्वारियाँ कम से कम और खुशियाँ ज़्यादा से ज़्यादा।

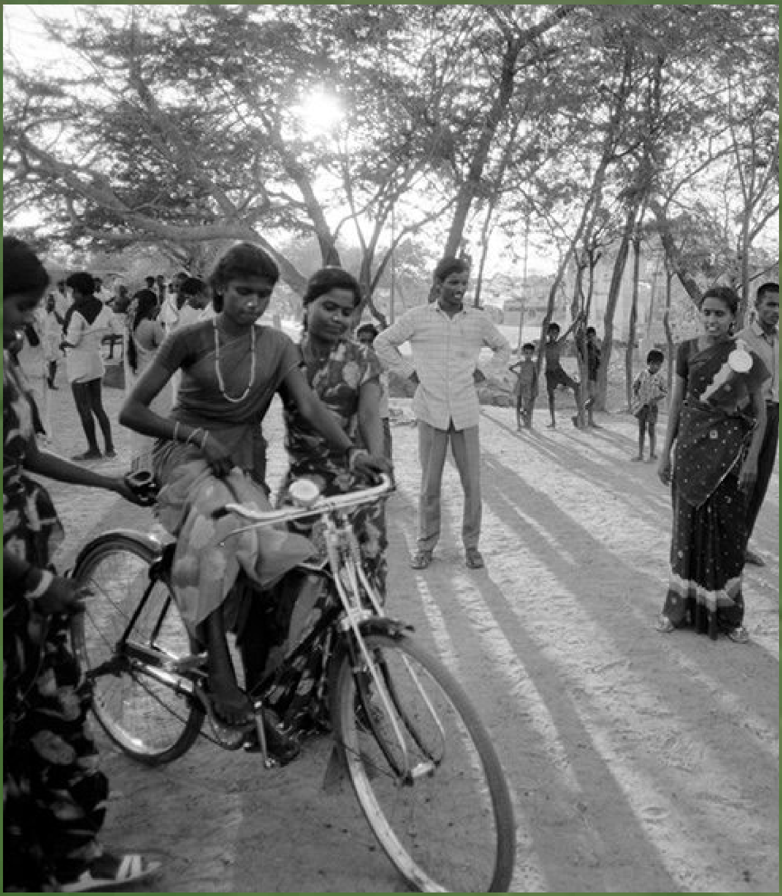

साइकिल आन्दोलन

तमिलनाडु के पुदुक्कोट्टई ज़िले में 1991 में एक ज़बरदस्त आन्दोलन छिड़ा। महिला साक्षरता फैलाने के इस आन्दोलन के तहत महिलाओं की व्यक्तिगत आज़ादी को बढ़ाना ज़रूरी समझा गया। इस दौर में पुदुक्कोट्टई के 3000 गाँवों की 50,000 महिलाओं ने साइकिल चलाना सीखा। उन्हें साइकिल खरीदने के लिए बैंक से कर्ज़ भी मिला।

शहद के छत्ते

वीरेन्द्र दुबे

चित्र: प्रशान्त सोनी

गाँव से बाहर पीपल के पेड़ पर शहद के सात छत्ते लगे थे। आते-जाते राहगीर भिनभिनाती मक्खियों के डर से तेज़ी से वहाँ से गुज़रते। आसपास रहने वाले गाँव वाले नज़र बनाए रखते कि कब शहद टपकेगा, कब तुड़ाई होगी।

बच्चे रोज़ पत्तों के दोने बनाकर रखते, कौन जाने कब शहद टपकने लगे। किस दिन शहद तुड़ाई हो जाए? रोज़ दोने बनाते, रोज़ दोने मुरझा जाते। होंठों पर जीभ फेरकर मन ही मन मिठास महसूस करते और उदास हो जाते।

उस दिन गाँव में हलचल मची थी। आज रात शहद तोड़ी जानी है। शहद तोड़ने में माहिर तैयारी कर रहे हैं। कहीं रस्सी से झूले बना रहे हैं। कोई लम्बी-लम्बी लकड़ियों में कपड़े लपेटकर धूर्रा बना रहे हैं। तेल की कुप्पी में तेल भर दिया है। टीन के पीपे धोए-सुखाए जा रहे हैं। मुँह बन्द करने के डांट बना रहे हैं। काम वाले कामों में लगे हैं और बाकी बतियाने में।

पुराने-किस्से कहानी हो रहे हैं। एक बार क्या हुआ? कैसी विकट समस्या

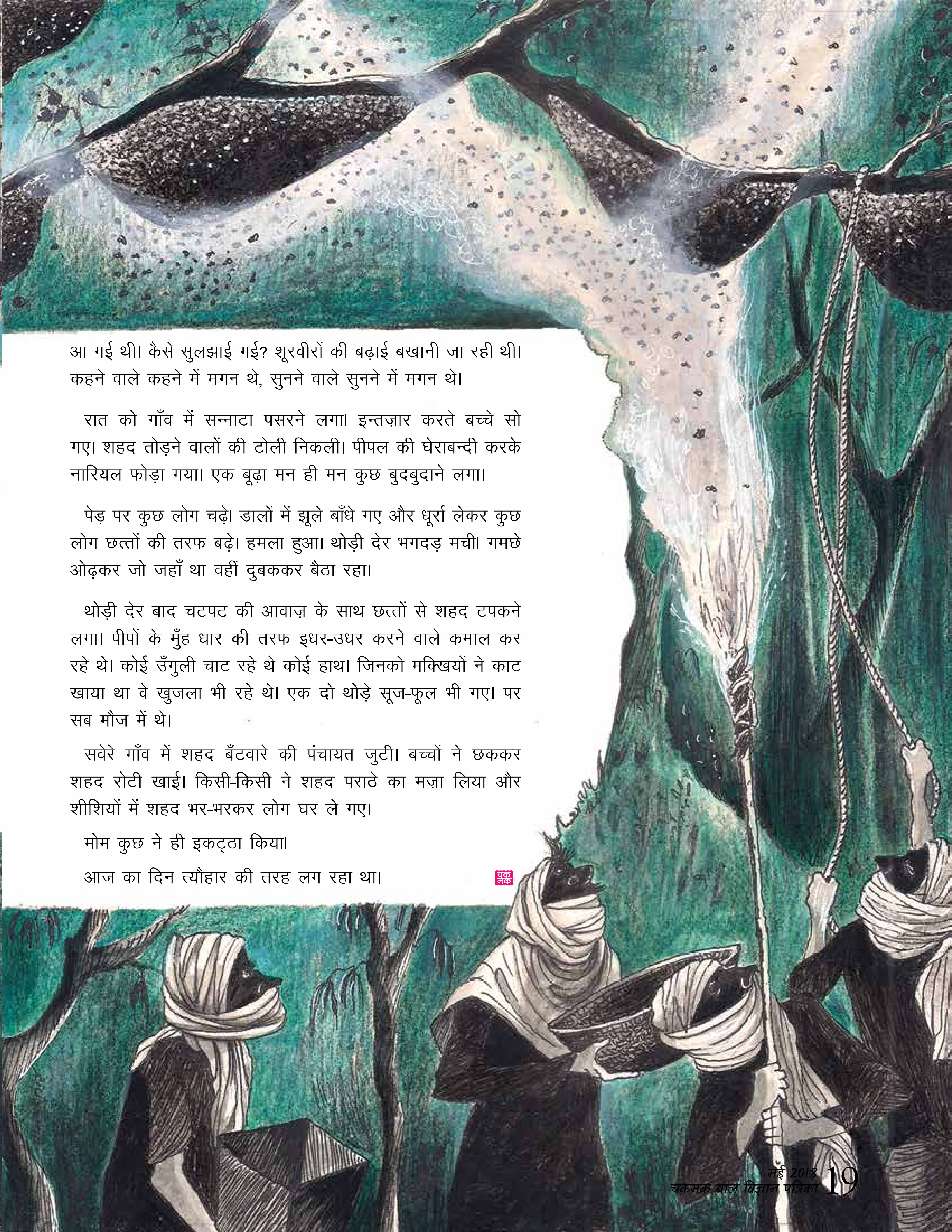

आ गई थी। कैसे सुलझाई गई? शूरवीरों की बढ़ाई बखानी जा रही थी। कहने वाले कहने में मगन थे, सुनने वाले सुनने में मगन थे।

रात को गाँव में सन्नाटा पसरने लगा। इन्तज़ार करते बच्चे सो गए। शहद तोड़ने वालों की टोली निकली। पीपल की घेराबन्दी करके नारियल फोड़ा गया। एक बूढ़ा मन ही मन कुछ बुदबुदाने लगा।

पेड़ पर कुछ लोग चढ़े। डालों में झूले बाँधे गए और धूर्रा लेकर कुछ लोग छत्तों की तरफ बढ़े। हमला हुआ। थोड़ी देर भगदड़ मची। गमछे ओढ़कर जो जहाँ था वहीं दुबककर बैठा रहा।

थोड़ी देर बाद चटपट की आवाज़ के साथ छत्तों से शहद टपकने लगा। पीपों के मुँह धार की तरफ इधर-उधर करने वाले कमाल कर रहे थे। कोई उँगुली चाट रहे थे कोई हाथ। जिनको मक्खियों ने काट खाया था वे खुजला भी रहे थे। एक दो थोड़े सूज-फूल भी गए। पर सब मौज में थे।

सवेरे गाँव में शहद बँटवारे की पंचायत जुटी। बच्चों ने छककर शहद रोटी खाई। किसी-किसी ने शहद पराठे का मज़ा लिया और शीशियों में शहद भर-भरकर लोग घर ले गए।

मोम कुछ ने ही इकट्ठा किया।

आज का दिन त्यौहार की तरह लग रहा था।

गुब्बारों के साथ पाँच मज़ेदार प्रयोग

मार्च अंक में हमने सिक्कों के साथ चार मज़ेदार प्रयोग दिए थे। इस बार हम गुब्बारों के साथ पाँच मज़ेदार प्रयोग दे रहे हैं। इन प्रयोगों को करके देखो और हमें लिख भेजो कि क्या हुआ और क्यों हुआ।

ध्यान रहे कि इन प्रयोगों को करने के लिए मध्यम आकार के गुब्बारों का ही उपयोग करना।

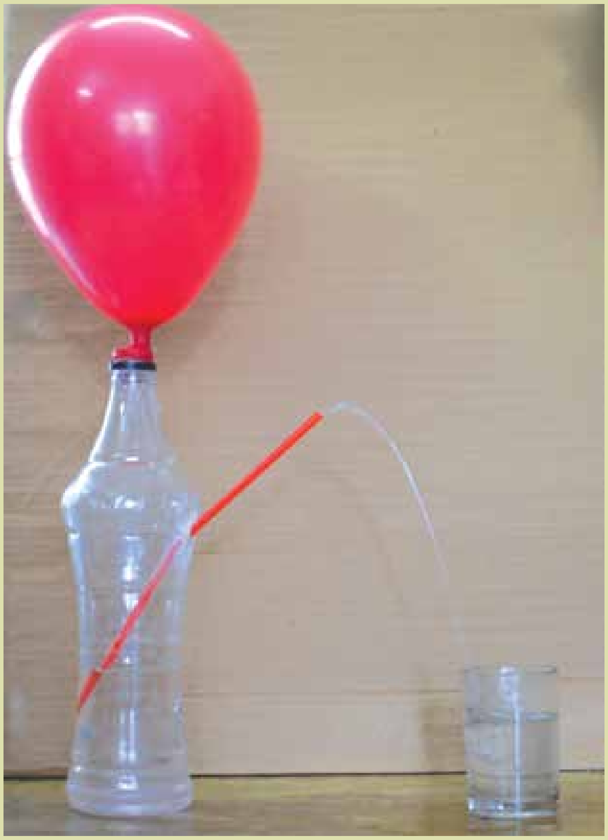

1. गुब्बारे का फव्वारा

सामग्री: प्लास्टिक की बोतल, लोहे की सींक, स्ट्रॉ, गुब्बारा, फेविकॉल गोंद, गिलास और पानी

प्लास्टिक की एक खाली बोतल लो। लोहे की सींक को गर्म करके उसकी मदद से बोतल में एक छोटा छेद कर लो। इस छेद से स्ट्रॉ को बोतल में डाल लो जैसे कि चित्र में दिखाया गया है। छेद के अतिरिक्त हिस्से को फेविकॉल गोंद लगाकर पूरी तरह बन्द कर दो। ध्यान रखना कि छेद से पानी लीक नहीं होना चाहिए। अब बोतल को पानी से लगभग आधा भर लो। और नली के नीचे एक गिलास या कप रख लो। गुब्बारे को फुलाओ और उसे चित्र में दिखाए तरीके से बोतल के ऊपर लगा दो। क्या हुआ? गुब्बारे को बोतल पर लगाते ही नली से पानी निकलने लगा ना! अनुमान लगाओ कि ऐसा क्यों होता होगा? इसी गतिविधि को अलग-अलग माप के गुब्बारे व नलियों के साथ भी करके देख सकते हो। तुमने क्या देखा हमें भी बताना।

फोटोग्राफ: दवंगरा

2. गुब्बारे में सिक्का

सामग्री: गुब्बारा और एक सिक्का

एक सिक्के को गुब्बारे के अन्दर डाल लो। ध्यान रहे कि सिक्के को गुब्बारे के अन्दर तक डालना है। ऐसा ना हो सिक्का गुब्बारे की गरदन में ही फँसा रह जाए। अब गुब्बारे को फुला लो। थोड़ी सावधानी से फुलाना - यदि फूट गया तो सिक्का तेज़ी-से दाँतों पर लग भी सकता है। अब फूले हुए गुब्बारे को बाँध दो। गुब्बारे को अपने एक हाथ में पकड़कर घुमाओ कुछ-कुछ वैसे ही जैसे चाबी के छल्ले को घुमाते हैं। तुम देखोगे कि पहले तो सिक्का उछलता है पर जब एक बार गति पकड़ लेता है तो सिक्का भी गुब्बारे के अन्दर चारों ओर घूमने लगता है। ऐसा क्यों होता होगा? इसका अनुमान लगाओ। हो सकता है कि एक बार गुब्बारे को घुमाने पर सिक्का चारों ओर ना घूमे। इसके लिए तुम्हें थोड़ा-सा प्रयास करने की ज़रूरत पड़ सकती है।

3. गुब्बारा और पेंच

सामग्री: एक गुब्बारा और कई सारे पेंच

एक गुब्बारे को फुला लो। अब एक छोटे पेंच को इस तरह रखो कि उसका नुकीला हिस्सा ऊपर की ओर हो। इस पेंच के ऊपर गुब्बारे को रखकर दबाओ। क्या हुआ? गुब्बारा फूट गया ना? अब ऐसे ही और कई सारे पेंचों (पेंच 10-20 से भी ज़्यादा हों) को इसी तरह उलटा करके रखो और उनके ऊपर इस फूले हुए गुब्बारे को रखकर दबाकर देखो। तुमने क्या देखा? ऐसा होने का क्या कारण होगा?

4. गुब्बारे का हॉवरक्राफ्ट

सामग्री: एक सीडी, गुब्बारा, बोतल का ढक्कन और फेविकॉल गोंद

बोतल के ढक्कन में कील की मदद से एक छोटा-सा छेद कर लो। अब इस ढक्कन को फेविकॉल गोंद की मदद से सीडी के छेद वाले हिस्से पर अच्छी तरह चिपका लो। ध्यान रखना कि हवा लीक ना होने पाए। अब गुब्बारे को फुलाओ और उसे थोड़ा-सा मोड़ लो (बाँधना मत) ताकि हवा बाहर न निकल पाए और उसे चित्र में दिखाए तरीके से ढक्कन के ऊपर लगा लो। अब इसे मेज़ या किसी भी समतल सतह पर रखो और देखो कि गुब्बारे का हॉवरक्राफ्ट कैसे मँडराता है। अलग-अलग माप के गुब्बारे इस्तेमाल करके देखो कि क्या हॉवरक्राफ्ट के मँडराने की गति में कोई फर्क आता है?

5. गर्म हवा और गुब्बारा

सामग्री: गुब्बारा, प्लास्टिक की बोतल, पानी, बर्फ व गर्म करने के लिए गैस और बरतन

एक बर्तन में थोड़ा पानी गरम कर लो। इसे प्लास्टिक की बोतल में डालो और कुछ मिनटों बाद बोतल को खाली कर लो। अब बोतल के मुँह पर एक गुब्बारा लगा दो। कुछ ही मिनटों में तुम देखोगे कि तुम्हारी बोतल कुछ पिचक गई है। अनुमान लगाओ कि ऐसा होने का क्या कारण होगा? गुब्बारे लगी बोतल को ठण्डे पानी में रखकर भी देखो कि क्या होता है? इसके लिए बर्तन में बर्फ डाल लो और उस पानी में अपनी बोतल को रख दो। चाहो तो अलग-अलग माप की बोतलें लेकर व बोतल में पानी की मात्रा कम-ज़्यादा करके भी देख सकते हो कि ऐसा करने से क्या असर पड़ता है?

कोयल के गीत

क्या तुम जानते हो?

हमें लुभाने वाला और कवियों की प्रेरणा, कोयल का गीत नर कोयल गाता है। मादा कोयल नहीं गाती। नर कोयल की तुलना में वह काफी चुप रहती है और अकसर किसी काम में लगी रहती है।

तुमने अपने आसपास कोयल को ज़रूर देखा होगा लेकिन मैं शर्त लगा सकती हूँ कि तुमने कभी उसका घोंसला नहीं देखा होगा। ऐसा इसलिए क्योंकि कोयल घोंसला बनाते ही नहीं हैं।

मार्च से अगस्त तक के महीनों में जब मादा कोयल अण्डे देने के लिए तैयार हो जाती है तो वह कौए का ऐसा घोंसला ढूँढती है जिसमें कौए ने अण्डे दे रखे हों। जब घोंसले के मालिक कहीं दूर होते हैं तो कोयल उनके घोंसले में अपने एक या एक से अधिक अण्डे दे देती है। कोयल अपने खुद के घोंसले नहीं बनाते ना ही वे अपने बच्चों का पालन-पोषण करते हैं। बेचारे कौए ही उनका यह सारा काम करते हैं।

कोयल के बच्चे को
खाना खिलाता कौआ

फील्ड डायरी

बाहर निकलकर सुनो - कोयल कहीं गा तो नहीं रहा है। उसकी आवाज़ के ज़रिए कोयल को ढूँढने की कोशिश करो। उन्हें ढूँढना इतना आसान नहीं होता क्योंकि आमतौर पर वो पेड़ की पत्तियों के बीच ऊँची जगहों पर बैठते हैं और काफी हद तक छिपे रहते हैं। उनकी चमकती हुई लाल आँखों को ज़रूर देखने की कोशिश करना!

एक बार जब कोयल तुम्हें दिख जाए तो दस मिनट तक ध्यान से उसे देखो और फिर अपनी डायरी में नोट करो कि:

- दस मिनट में नर कोयल कितनी बार गाता है?
- क्या उसके आसपास कोई मादा कोयल है?
- क्या कोयल के आसपास तुम्हें किसी कौए का घोंसला मिला?
- क्या तुमने किसी कौए को कोयल का पीछा करते देखा?
- कोयल की आवाज़ की नकल करो, क्या तुम्हारी आवाज़ सुनकर वो वापिस कूउउ... की आवाज़ करता है?

हमें लिखकर बताओ कि तुमने क्या देखा।

nature conservation foundation
science for conservation
नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउंडेशन
द्वारा विकसित

कोयल एक कुकू

कोयल कुकू परिवार के सदस्य हैं। भारत में पाई जाने वाली कुछ अन्य कुकू हैं, पपीहा या ब्रेनफीवर बर्ड (कॉमन हॉक कुकू), देसी कुकू या फल पक्वा (इण्डियन कुकू) और काला पपीहा या चातक (पाइड कुकू, मानसून का सूचक)। ये सब और दुनिया भर में पाई जाने वाली अन्य सभी कुकू अपने अण्डे दूसरे पक्षियों के घोंसलों में देती हैं। यानी कि इनके बच्चे किसी अन्य पक्षी के घोंसले में पलते हैं।

काला पपीहा या
चातक (पाइड कुकू)

पपीहा या ब्रेनफीवर
बर्ड का सबएडल्ट
(कॉमन हॉक कुकू)

देसी कुकू या फल पक्वा
(इण्डियन कुकू)

प्रतियोगिता

कहते हैं कि बसन्त के आने का पता तब चलता है जब आम के पेड़ पर कोयल पुकारने लगता है। क्या तुम्हें लगता है कि यह बात सही है? अपने परिवार के बड़ों व अपने दोस्तों से कोयल के बारे में प्रचलित कहानियों व धारणाओं के बारे में पूछो। अपनी कहानी हमें भेजो और एक किताब जीतने का मौका पाओ।

चित्र- 1 नहर के किनारे

परीकथाएँ और एक अनोखा संग्रहालय

चित्रा विश्वनाथन

कोपेनहैगन बहुत ही सुन्दर शहर है और इसकी बेहद खूबसूरत इमारतें, सड़कें और नहरें देखने लायक हैं। नाव में बैठकर इन नहरों के मार्ग से विभिन्न इमारतों को देखना काफी यादगार रहा। हमने डेनमार्क की रानी मार्गरेथ का राजमहल भी देखा। डेनमार्क की शासन व्यवस्था तो लोकतांत्रिक है मगर ब्रिटेन की तरह यहाँ भी सर्वोच्च पद पर रानी है। हमने दो दिन इस शहर के नज़ारे देखने में लगाए। फिर हम निकले ओडेंस की ओर।

ओडेंस कहते ही हमें मशहूर बाल साहित्यकार, हैंस क्रिस्टियन एंडरसन याद आते हैं। बच्चों के लिए उनके द्वारा लिखी गई परीकथाएँ आज भी पढ़ी जाती हैं। बदसूरत बत्तख, सम्राट के नए कपड़े, नाईटिंगेल, जैसी उनकी कहानियाँ दुनियाभर की बच्चों की लोकप्रिय कहानियों में गिनी जाती हैं। एंडरसन ने तीन हज़ार से भी अधिक परीकथाएँ लिखीं और विश्व की एक सौ पच्चीस से भी अधिक भाषाओं में इनका अनुवाद हुआ है।

हैंस क्रिस्टियन एंडरसन का जन्म इसी ओडेंस कस्बे में सन् 1804 में एक बहुत गरीब परिवार में हुआ था। आज उनके उस पुराने घर को संरक्षित करके वहाँ एक संग्रहालय

चित्र- 2 संग्रहालय स्थित हैंस एंडरसन का शिल्प - पानी में खडे एंडरसन

चित्र- 3 खिलौना सैनिक और सम्राट के नए कपड़े

बनाया गया है। किसी और बाल साहित्यकार को शायद ही इतने प्यार से याद किया जाता होगा। संग्रहालय में उनकी किताबों और उनके द्वारा उपयोग की गई चीज़ों को रखा गया है। उनके पिता जूते सिलने वाले कारीगर थे और माँ लोगों के कपड़े धोती थीं। उनके द्वारा उपयोग किए गए औज़ार भी यहाँ रखे गए हैं।

चित्र- 4 देसी वैद्य की दुकान

ओडेंस में इस संग्रहालय के अलावा, जिस घर में एंडरसन पैदा हुए और जिस घर में वह पले-बढ़े दोनों को संरक्षित किया गया है। पास ही में एक बगीचा है जहाँ उन्नीसवीं सदी के डेनमार्क के गाँव के नज़ारे हैं जिनके बीच एंडरसन बढ़े हुए थे। इससे जुड़ा हुआ है बच्चों का एक सांस्कृतिक केन्द्र जहाँ एंडरसन की कहानियों को सुनाया जाता है और उन पर बनी फिल्म, नाटक दिखाए जाते हैं।

चित्र- 5 पुराने घर व सड़क के बीच घोड़ा बग्गी

शहर में जगह-जगह चौराहों में एंडरसन की परीकथाओं के पात्रों व कहानियों के शिल्प हैं, जैसे खिलौना सैनिक (जिसका एक पाँव नहीं था), बदसूरत बत्तख, माचिस वाली नन्ही लड़की, सम्राट के नए कपड़े...।

इन सबको देखना एक सुन्दर अनुभव था।

ओडेंस से हम उत्तर की ओर चले और आर्हस पहुँचे। यह शहर भी अपने एक अनोखे खुले संग्रहालय के लिए मशहूर है जिसका नाम है डेन गेमलेबी। इस खुले संग्रहालय में उन्नीसवीं सदी के घर, सड़क, दुकान, कारीगरों के घर आदि देखे जा सकते हैं। इनमें से कई मकानों में लोगों के मोम से बने शिल्प हैं जो जीते-जागते लोगों जैसे ही दिखते हैं। मगर कई जगह असली लोग पुराने स्टाइल के कपड़े पहनकर उन दिनों जैसी कारीगरी करते देखे जा सकते हैं। इनमें बेकरी, बढ़ई, पुस्तक निर्माता, देसी दवा डॉक्टर, घड़ीसाज़, बुनकर, टेलर, साइकिल बनाने वाले, वगैरह थे। हमने एक खूब ऊँचे हट्टे-कट्टे घोड़े द्वारा खींची गई पुरानी बग्गी में उस शहर की सैर भी की। एक कमरे मे पुराने ज़माने के दादाजी की घड़ियों का जमावड़ा भी था। इतनी तरह की घड़ियाँ मैंने पहले कभी नहीं देखी थीं।

चित्र- 6 ऊन कातते हुए

अगले दिन सुबह हम तैयार होकर फ्रेड्रिकशान नामक शहर पहुँचे। यह समुद्र के किनारे बसा है। यहाँ से हम एक जहाज़ पर सवार होकर स्वीडन के लिए निकले। हमारे साथ हमारी बस भी इसी जहाज़ के तहखाने में सवार होकर आई। स्वीडन की बातें अगले अंक में...।

चित्र- 7 दादाजी की घड़ियाँ

माचिस वाली नन्ही लड़की

हैंस क्रिस्टियन एंडरसन

भयानक सर्दी थी, बर्फ गिर रही थी। शाम का वक्त था और अँधेरा होने को था। वह साल की आखिरी शाम थी। ऐसी सर्दी और धुन्धलके में एक छोटी बच्ची नंगे पैर और नंगे सिर सड़क पर चली जा रही थी। घर से निकलते वक्त तो उसने चप्पलें पहनी थीं, पर वो किसी काम की नहीं थीं। वो चप्पलें उसके लिए बहुत बड़ी थीं, क्योंकि वो उसकी माँ की चप्पलें थीं। दो गाड़ियाँ बहुत तेज़ रफ्तार से वहाँ से गुज़रीं तो उसने दौड़कर सड़क पार किया और उसकी चप्पलें उसके पैर से निकल गईं। एक चप्पल तो उसे मिली ही नहीं और दूसरी को एक लड़का यह सोचते हुए उठाकर भाग गया कि जब उसके बच्चे होंगे तो वह उसे पालने की तरह इस्तेमाल कर सकता है। इसलिए वह छोटी लड़की सड़क पर नंगे पैर ही चली जा रही थी। ठण्ड के कारण उसके पैर बहुत लाल और नीले हो गए थे। एक पुराने चोगे में उसने माचिस के बहुत-से बण्डल रखे हुए थे और एक बण्डल उसके हाथ में था। दिनभर में उसकी एक भी माचिस नहीं बिकी थी और उसे एक पैसा तक नहीं मिला था।

चित्र: निहारिका शिनॉय

वह भूख और ठण्ड से काँपती हुई धीरे-धीरे चली जा रही थी। वह छोटी बच्ची मुसीबतों और तकलीफों की जीती-जागती तस्वीर लग रही थी! उसकी गरदन पर बिखरे सुन्दर, लम्बे, घुँघराले, सुनहरे बालों पर बर्फ के कतरे गिर रहे थे। वहाँ सभी खिड़कियों में से रोशनी चमक रही थी और भुनी हुई बत्तख की शानदार खुशबू आ रही थी। नए साल की रात जो थी। हाँ, उसे भी इस बात का ख्याल आया।

वहाँ दो घरों के बीच एक कोना बना हुआ था। उसमें से एक घर सड़क की ओर ज़्यादा आगे निकला हुआ था। वह उस कोने में अपने नन्हे पैरों को सिकोड़कर बैठ गई। उसका शरीर बहुत ठण्डा होता जा रहा था फिर भी उसमें घर जाने की हिम्मत नहीं थी क्योंकि वह एक भी माचिस नहीं बेच पाई थी और एक पैसा तक नहीं कमा पाई थी। उसे यकीन था कि घर लौटने पर उसके पिता उसे खूब मारेंगे। इसके अलावा उसके घर में ठण्ड भी बहुत थी, क्योंकि उनके घर में ठण्ड से बचने के लिए छत के सिवाय और कुछ नहीं था। उस छत में से भी सनसनाती हुई हवा भीतर आ जाती थी। हालाँकि छत की बड़ी-बड़ी दरारों को बन्द करने के लिए उनमें घास-फूस और चिथड़े ठूँस दिए गए थे।

उसके हाथ ठण्ड के मारे लगभग सुन्न हो गए थे। ओह! एक छोटी-सी माचिस की तीली से उसे कितनी गर्मी मिल सकती थी! बस किसी बण्डल में से एक तीली निकालकर उसे दीवार पर रगड़ना था, और फिर वह अपने हाथ गर्म कर सकती थी। उसने एक तीली बाहर निकाली और चिट्ट! की आवाज़ के साथ वह फड़फड़ाते हुए जल उठी! अपनी गर्म और चमकदार लौ के साथ वह किसी छोटी-सी मोमबत्ती की तरह दिख रही थी। उसने अपने हाथ लौ के ऊपर रखे पर उससे तो बहुत ही अजीब रोशनी निकल रही थी। उस छोटी लड़की को ऐसा लग रहा था जैसे वह लोहे के किसी बड़े-से स्टोव के सामने बैठी हो जिसमें पीतल की चमकदार घुण्डियाँ और ढक्कन लगे हों। क्या शानदार आग जल रही थी! अब वहाँ बैठना कितना आरामदायक हो गया था। बच्ची ने अपने पैर फैलाए ताकि उनको भी गरमाहट मिले, पर तब तक वह छोटी-सी लौ बुझ गई, स्टोव गायब हो गया और उसके हाथ में बुझी हुई माचिस की तीली भर रह गई।

उसने दीवार से रगड़कर एक और तीली जलाई। वह भी खूब चमक के साथ जली और जब उसकी रोशनी उस घर की दीवार पर पड़ी तो दीवार एक पतले परदे की तरह पारदर्शी हो गई और लड़की को दीवार में से भीतर का कमरा दिखाई देने लगा। वहाँ मेज़ पर एक झक सफेद मेज़पोश बिछा था। उस पर डिनर के लिए चमकदार बरतन सजे हुए थे। भुनी हुई बत्तख से शानदार खुशबू फैल रही थी और उसमें सेब और सूखे आलूबुखारे भरे हुए थे। सबसे मज़ेदार बात यह हुई कि बत्तख प्लेट से कूदकर नीचे आ गई और अपने सीने में धँसे छुरी और काँटे के साथ फर्श पर ठुमककर चलते हुए नन्ही बच्ची के पास पहुँच गई। तभी माचिस फिर बुझ गई और अब बच्ची को बस वह मोटी और ठण्डी दीवार दिखाई दे रही थी। उसने एक और माचिस जलाई। अब वह एक सुन्दर क्रिसमस-ट्री के नीचे बैठी थी। यह उस पेड़ से भी बहुत बड़ा और कहीं ज़्यादा सुन्दर था जो पिछली क्रिसमस को उसने धनी व्यापारी के घर के काँच के दरवाज़े में से देखा था। इस पेड़ की हरी शाखों पर हज़ारों मोमबत्तियाँ जल रही थीं और छापाखानों में लगे चित्रों की तरह दिखने वाले रंगीन चित्र भी उस पर लगे थे और उसकी तरफ नीचे देख रहे थे। बच्ची ने उनकी तरफ अपने दोनों हाथ बढ़ाए, कि तभी माचिस बुझ गई। लेकिन क्रिसमस-ट्री पर लगी मोमबत्तियाँ ऊपर उठती गईं। अब उसे वे आसमान के तारों जैसी दिख रहीं थी। उनमें से एक तारा नीचे गिर गया और उसने आग की एक लम्बी लकीर बना दी।

"अभी कोई मर रहा होगा," उस नन्ही बच्ची ने सोचा, क्योंकि उसकी बूढ़ी दादी, जो उसे प्यार करने वाली अकेली व्यक्ति थीं और जो अब इस दुनिया में नहीं थी, ने उसे बताया था कि जब कोई तारा नीचे गिरता है तो किसी की आत्मा ऊपर भगवान के पास जाती है।

उसने एक और माचिस दीवार से रगड़ी। फिर से खूब रोशनी हो गई और इस रोशनी में उसे उसकी बूढ़ी दादी एकदम साफ और उजली दिखाई दे रही थीं, और वे उसकी तरफ बहुत दया और प्रेम से देख रही थीं।

"दादी!" बच्ची चिल्लाई, "मुझे अपने साथ ले चलो! मुझे मालूम है कि माचिस बुझते ही तुम चली जाओगी। तुम भी उस गर्म स्टोव, उस शानदार भुनी हुई बत्तख और उस सुन्दर बड़े क्रिसमस-ट्री की तरह गायब हो जाओगी।"

और उसने जल्दी-जल्दी माचिसों का पूरा बण्डल घिसकर जला दिया क्योंकि वह अपनी दादी को अपने

पास रोके रखना चाहती थी। सारी माचिसें इतनी चमक के साथ जल रहीं थी कि उतनी रोशनी तो दिन में भी नहीं होती। दादी इतनी भव्य और सुन्दर कभी नहीं दिखाई दी थीं। उन्होंने बच्ची को अपनी बाँहों में उठा लिया और दोनों धरती के ऊपर प्रकाश और आनन्द में उड़ चलीं, बहुत-बहुत ऊपर। और वहाँ न तो ठण्ड थी, न भूख, न डर। अब वे भगवान के साथ थीं।

लेकिन उस कोने में, दीवार से सटकर लाल गालों और मुस्कराते हुए चेहरे के साथ वह छोटी लड़की अभी भी बैठी हुई थी। पिछले साल की उस आखिरी शाम को ठण्ड ने उसकी जान ले ली थी। नए साल के सूरज की किरणें उस छोटे-से दयनीय शरीर पर पड़ीं। वह बच्ची वहीं बैठी थी, उसका शरीर अकड़ गया था और ठण्डा पड़ चुका था। उसके हाथ में अभी भी माचिस के बण्डल थे जिनमें से एक बण्डल लगभग जल चुका था।

"वह खुद को गरमाहट देना चाह रही होगी" लोग कह रहे थे। किसी को कल्पना भी नहीं थी कि उसने कितनी खूबसूरत चीज़ें देखी थीं, और वह अपनी बूढ़ी दादी के साथ कितनी खुशी-खुशी एक उजले नए साल की ओर चली गई थी।

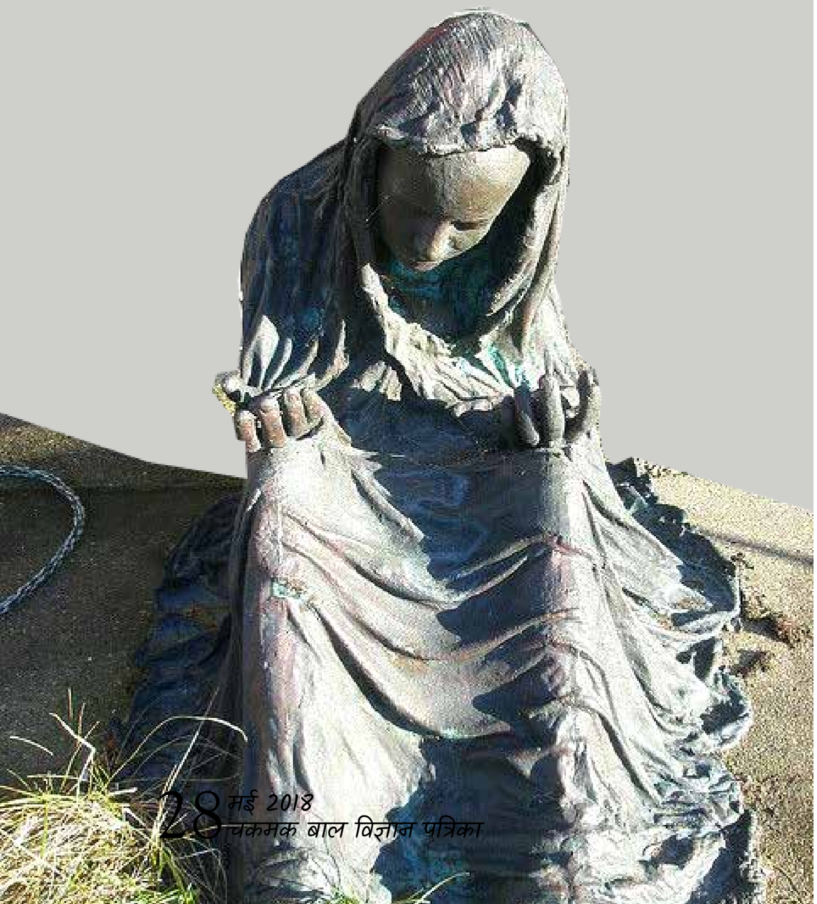

काम और कामगार

सी एन सुब्रह्मण्यम्

सलमा ने सुबह उठकर अपना मुँह धोया, दातुन किया और चाय बनाकर पी। फिर जल्दी से बाहर नल से पानी भरा। इतने में घर के लोग एक-एक करके उठने लगे। उनके लिए चाय बनाकर दी और फिर नाश्ता बनाने में लग गई। नाश्ता बना तो परिवार के लोगों ने मिलकर खाया, सलमा ने भी। सलमा के पति तैयार होकर स्कूटर गैराज के लिए निकले। वे स्कूटर मरम्मत करते हैं। फिर सलमा ने नहाया और अपने कपड़े साबुन लगाकर धोए। नहाकर आई तो कुछ देर उसने इबादत की। फिर वह दोपहर के भोजन की तैयारी करने लगी। इस बीच वह बहुत थक गई सो, कुछ देर सोफे में बैठकर उसने टीवी देखा और हलकी-सी झपकी भी ली। कुछ देर बाद दो लड़कियाँ आईं अपना सलवार-कमीज़ सिलवाने, सलमा ने उनका नाप लिया और कपड़े रख लिए। उनके जाने के बाद उसने खाना बनाया और सलवार-कमीज़ सिलने बैठ गई।

शायद यह हमारे आसपास के कई परिवारों की आम बातें हैं। लेकिन अगर मैं तुमसे पूछूँ कि सलमा के घर में कौन काम करता है तो शायद ही तुम सलमा का नाम लो।

कोई कहता है, 'मेरे पास बहुत काम है, आराम के लिए कोई वक्त नहीं है' तो कोई और कहता है, 'मेरे पास काम नहीं है, मैं काम तलाश रहा हूँ।' अकसर सलमा जैसे लोगों से यह भी सुनने को मिलता है, 'मैं कोई काम नहीं करती हूँ, बस घर सम्भालती हूँ।' महिलाएँ घर पर लगातार कुछ न कुछ करती रहती हैं, फिर भी यह कहा जाता है कि वे काम नहीं करती हैं।

तो सवाल है, काम क्या है- इतना तो साफ है कि काम करने में शारीरिक व मानसिक परिश्रम लगता है। वैसे खाना खाने में भी परिश्रम लगता है (और शायद गप्पे लड़ाने में भी)। लेकिन इन्हें हम काम नहीं मानते हैं। तो परिश्रम के अलावा भी कुछ और की भी ज़रूरत है। शायद यह कहें कि वह परिश्रम जिसका उद्देश्य मनुष्यों के लिए उपयोगी चीज़ बनाना है या सेवा देना है।

अकसर परिवार के लिए किए गए काम को काम नहीं माना जाता है - कम से कम उत्पादक काम नहीं। जैसे परिवार जनों के लिए खाना पकाना, साफ-सफाई या फिर बीमारों की सेवा। माना जाता है कि यह सब हम अपने लिए करते हैं। लेकिन अगर हम परिवार की जगह व्यक्ति को समाज की इकाई मानते हैं (जैसे कि हमारा संविधान करता है) तो यह सब भी काम और उत्पादक काम ही है। तार्किक रूप से देखा जाए तो वो सब जिसे हम दूसरों से करवा सकते हैं काम हैं और केवल वो जिन्हें हम दूसरों से नहीं करवा सकते हैं वह काम की श्रेणी से बाहर होगा। उदाहरण के लिए खाना बनाना काम है क्योंकि हम इसे किसी और से भी करवा सकते हैं, लेकिन खाना खाना काम नहीं हो सकता है क्योंकि हम किसी और को हमारा खाना खाने के लिए नहीं कह सकते हैं। वो तो हमें ही करना होगा। इसी तरह फिल्म देखना, गीत सुनना, नज़ारे देखना.. यह सब हम किसी और से नहीं करवा सकते हैं। यानी स्वयं के उपभोग के अलावा सब कुछ काम है।

क्या तुम बता सकते हो कि सलमा ने जो भी किया, उसमें काम क्या था और क्या नहीं था?

समाज में उत्पादन कितना हो रहा है, और किसके द्वारा यह उत्पादन किया जा रहा है इसे समझने के लिए काम को बेहतर समझना ज़रूरी है। अगर परिवार के लोगों के लिए रोटी बनाना काम है और रोटी उत्पादन है, और परिवार के बीमार लोगों का खयाल रखना सेवा का उत्पादन है। लेकिन इनकी गणना या हिसाब रखना बहुत मुश्किल है। हमारे पास ऐसे कोई तरीके नहीं हैं जो इनका मूल्य आँके और दिनभर और सालभर इस उत्पादन की गणना करें। इसलिए प्रायः इनको नज़रन्दाज़ कर दिया जाता है। लेकिन ये पूरे समाज और अर्थ व्यवस्था के आधार पर हैं और खासकर भारत जैसे देशों में जहाँ रोटी जैसी चीज़ बहुत कम लोग बाज़ार से खरीदते हैं या बीमार होने पर अस्पताल में भर्ती हो जाते हैं।

हम जो भी काम करते हैं, उसे दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है, वैतनिक काम और अवैतनिक काम। यानी

वह काम जिसके लिए हमें किसी प्रकार का भुगतान होता है चाहे वह पैसों के रूप में हो या चीज़ों के रूप में या फिर सेवा के रूप में - उन्हें हम वैतनिक काम की श्रेणी में रखेंगे। आमतौर पर गणना करते समय वैतनिक काम को ही हिसाब में लिया जाता है। वैतनिक काम की कई और विशेषताएँ भी हैं।

वैतनिक काम आमतौर पर घर के बाहर किया जाता है, जिसके दौरान आप तरह-तरह के अपरिचित लोगों से मिलते हैं और उनसे लेन-देन करते हैं। उससे जो आमदनी मिलती है, वह आपको बाज़ार में एक हैसियत देती है। अगर आमदनी ठीक न हो तो भी आप दूसरों से मिलकर अपनी स्थिति को सुधारने का संघर्ष कर सकते हैं। कुल मिलाकर वैतनिक काम आपको स्वतंत्र और सशक्त बनाता है। इसकी तुलना में आमतौर पर अवैतनिक काम घर पर ही होता है। इसमें अपरिचित लोगों से मिलने-जुलने या आमदनी को स्वतंत्रता के साथ खर्च करने की सम्भावनाएँ कम हैं।

अब अगर हम देखें कि कौन अवैतनिक काम ज़्यादा करते हैं और कौन कम तो एक स्पष्ट चित्र उभरता है। आमतौर पर महिलाएँ अवैतनिक काम अधिक करती हैं और पुरुष वैतनिक काम अधिक करते हैं। यानी जिस काम से स्वतंत्रता और खर्च करने की क्षमता मिलती है, वह ज़्यादातर पुरुष करते हैं। चूँकि महिला अवैतनिक काम की बोझ से दबी हैं उनके पास वैतनिक काम लेने की सम्भावना भी कम है।

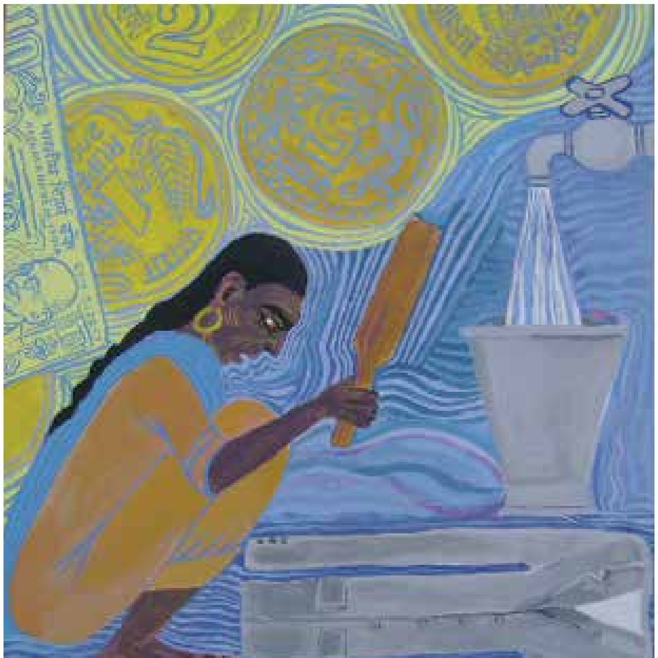

चित्र - कैरन हैडॉक

2011 में किए गए राष्ट्रीय सैंपिल सर्वेक्षण के अनुसार ग्रामीण इलाकों में केवल 20 प्रतिशत महिलाएँ वैतनिक काम करती हैं जबकि लगभग 70 प्रतिशत महिलाएँ अवैतिनिक काम (जैसे पानी भरना, खाना पकाना, बच्चों व बूढ़ों की देखभाल, अचार-पापड़ बनाना, जलाऊ लकड़ी व फल बीनना, गाय-बकरी पालना, घर के लोगों के लिए सिलाई-कढाई.. वगैरह) करती हैं। इसके विपरीत अवैतनिक काम करने वाले ग्रामीण पुरुष न के बराबर हैं जबकि लगभग 80 प्रतिशत ग्रामीण पुरुष वैतनिक काम करते हैं।

शहरों में यह अन्तर और विकट हो जाता है। शहरी महिलाओं में से लगभग 18 प्रतिशत ही वैतनिक काम करती हैं जबकि 60 प्रतिशत से अधिक अवैतनिक काम करती हैं। इसकी तुलना में शहरी पुरुषों में से 73 प्रतिशत वैतनिक काम कर रहे हैं और घरेलू काम करने वाले न के बराबर हैं।

मोटे रूप में कहें तो हमारे देश में महिलाएँ अधिक काम करती हैं और उनका ज़्यादातर काम अवैतनिक है। वैसे किसी भारतीय को इस बात में कोई अचरज नहीं होगा - हम इसे हर घर-परिवार में देख सकते हैं। लेकिन महिलाओं की स्वतंत्रता और समानता की दृष्टि से यह काफी चिन्ताजनक बात है। यही नहीं विश्वभर में यह स्वीकारा जाता है कि किसी कामगार के कुछ मूलभूत अधिकार हैं, जैसे, नियमित काम के घण्टे, छुट्टी, बीमारी या दुर्घटना बीमा, गर्भावस्था देखभाल और छुट्टी, वृद्धावस्था पेंशन आदि। अब सवाल है कि अगर किसी के काम को काम ही न माना जाए और उन्हें कामगार की गिनती में न लिया जाए तो ये अधिकार उन्हें उपलब्ध होने का सवाल ही नहीं है।

अगर हम हर इंसान के लिए सम्मानजनक जीवन, स्वतंत्रता और काम के मौके देने की बात करते हैं तो इन बातों की तह तक जाकर विचार करना होगा।

तराशे आदमी की झोंपड़ी जैसा रंग-रूप

विनोद कुमार शुक्ल

शिलालेख की चर्चा के दौरान बाबूलाल महराज ने कहा था कि बौना पहाड़ यद्यपि छोटा है, पर उसमें छुपी हुई दुनिया बड़ी है। उन्होंने कहा था कि एक टिमटिमाता तारा दूरी के कारण छोटा दिखता है। उसकी विराटता को दूरी ने टिकली जैसा टिमटिमाता बना दिया है। बौना पहाड़ तो समीप से भी बौना है। पर अपनी रहस्य की गहराई और ऊँचाई को छुपाए हुए सिमट गया है। वह दिखता कम है पर वह अधिक है।

रात का अँधेरा उसे छुपा लेता है जो दिन में दिखता है। देखने के लिए उजाला चाहिए और दिखने के लिए भी। जुगनू का प्रकाश दिखने के लिए है। अँधेरे में वह दिख जाता है। पर दिन में नहीं दिखता। दिन में उसे देखें तो पहचान भी नहीं सकते। अगर कोई पहचनवा दे तो फिर देखें तो पहचान लें।

बौना पहाड़ के ऊपर चट्टान है, यह तो है। उसके अन्दर भी चट्टान होगी। टहनी पेंसिल से पत्थर की किताब लिखी जा सकती है। लिखा हुआ हमेशा होना चाहिए जो पढ़े उसे लगे कि दूसरे भी पढ़ लें। किसी एक समय का सत्य सब समय में मालूम होना चाहिए। शिलालेख सैकड़ों साल पढ़ा जा सकता है। एक छोटी टहनी पेंसिल से शिलालेख लिखना आसान हो गया था। टहनी का लिखा हुआ मिटता नहीं था।

बच्चे अतीत और भविष्य के बीच खड़े हैं। उन्हें अतीत और भविष्य के पल्ले के तराजू से आज के समय के भार को तौलना सीखना चाहिए। अतीत और भविष्य के बीच सन्तुलन बनाना आना चाहिए। और इसके लिए अपने और दूसरों के अनुभव के बाट की सहायता से तौलना चाहिए। समय ऊँचाई पर नहीं पहुँचेगा जब तक मनुष्य ऊँचाई पर नहीं पहुँचेगा। उदाहरण के लिए बच्चों तुमने अगर कुछ ढूँढ लिया तो इसका मतलब समय ने ढूँढ लिया। और तुम्हारे ढूँढे हुए को जो तुम्हारी खोज है उसे समय सुरक्षित रखता है। पर जब उसकी ज़रूरत खतम हो जाती है तो समय उसको भुला देता है। अनुपयोगी चीज़ों को बीते समय पर रहने दो पर वह कचरा न हो। समय की ताकत होती है। कई बार अच्छाई जल्दी नष्ट हो जाती है। और बुराई का कचरा हर समय फैला रहता है। इस तरह का लेखा-जोखा तब तक रहेगा जब तक मनुष्य रहेगा। और मनुष्य को हर समय रहना है। अच्छाई को भी हर समय रहना है। अतीत और भविष्य के बीच केवल वर्तमान में सन्तुलन बनाया जा सकता है।

इस बार बोलू और कूना सफेद परतदार चट्टान को ढूँढने चले। सब मित्रों का इन्तज़ार करने का समय नहीं था। प्रायः सारे लोग अचानक एक जगह इकट्ठे हो जाते हैं। नहीं तो एक-दो में बिखरे रहते हैं।

कूना ने कहा, “सफेद चट्टान मिल जाए तो सबको बताएँगे।” कूना के कहने पर बोलू उसके साथ चल पड़ा।

वह कुछ बोलकर

कुछ चलकर

कुछ रुककर

कुछ मुड़कर

कुछ सीधे चलकर चला।

कूना, बोलू बौना पहाड़ पर चढ़ रहे थे। पहाड़ पर चढ़ना और उतरना, कभी इधर चढ़ते, कभी उधर उतरते। पहाड़ पर चढ़ते समय तो कभी-कभी उतरना भी पड़ता है।

कूना ने कहा, "सब जगह काली चट्टानें हैं। अगर काली चट्टान परतदार कागज़ की तरह होती तो ऐसे पेड़ भी उग आते जिसकी टहनी सफेद स्याहीवाली होती।"

बोलू ने कहा, "बाबूलाल महराज को इस बात का पता होगा। हो सकता है उनके पास सफेद स्याहीवाली टहनी भी हो। एक ही बार में सब बात पता नहीं चलती।"

बोलू ने फिर कूना से पूछा, "क्या अभी सफेद स्याहीवाली टहनी का पेड़ ढूँढने जंगल लौट चलें?"

कूना ने कहा, "यह पता कैसे चलेगा कि मिली टहनी में सफेद स्याही है या काली?"

बोलू और कूना अब सिर्फ अपने लक्ष्य को ध्यान में रखकर आगे बढ़ रहे थे।

बोलू ने कहा, "इस बार परतदार चट्टान ढूँढने के लिए हम चढ़े कम हैं, उतरे अधिक हैं। थोड़ा आगे जाते हैं फिर इधर-उधर देखते हुए इधर-उधर हो जाते हैं। समझ में नहीं आता कि आगे जाने के लिए ऊपर से जाएँ या नीचे से जाएँ। यहाँ से खड़े होकर पीछे देखो। अपने को लगता है कि बहुत चले हैं पर यह कितना पास है।"

ऊँचाई पर एक बड़ी गोल चट्टान थी। उस पर चढ़ते हुए कूना से पैर जमाते नहीं बन रहा था। इस गोल पत्थर में चारों तरफ केवल ढलान थी। बोलकर चलने की आदत के कारण बोलू को पैर जमाने की आदत-सी पड़ गई थी। वह नीचे देखता भी नहीं पर उसके पैर जहाँ पड़ते वे ठीक पड़ते और वह डगमगाता नहीं।

यहाँ यह बताना उचित होगा कि बार-बार यह बताने की आवश्यकता नहीं कि बोलू बोलकर चढ़ता है। उसके कदम और बोल साथ निकलते हैं। यह बताना कठिन होगा कि पहले कदम उठते हैं या बोलना।

गोल चट्टान के ऊपर कोई चट्टान नहीं थी। और गोलाई के ऊपर बैठने की सपाट जगह नहीं थी। इस चट्टान के नीचे गोल चट्टान को लुढ़कने से रोकने के लिए कई चट्टानें थीं। नीचे की चट्टानों में खाली जगहें छूटी हुई थीं। गोल चट्टान के ऊपर चढ़कर बोलू दूसरी तरफ से उतरने की कोशिश करने लगा। कूना, बोलू से सहायता लेकर उसके साथ किसी तरह थी। बोलू पीठ के बल नहीं उतरना चाहता था। वह गोल चट्टान पर पेट के बल हो गया। उसके दोनों हाथों की हथेलियाँ जैसे चट्टान से चिपक गई थीं। उसने कूना से कहा कि वह भी उसके कँधों पर दोनों पैर रखकर चट्टान पर उसकी तरफ पेट के बल हो जाए। कूना ने वैसा ही किया। बोलू धीरे-धीरे चट्टान से नीचे खिसकने लगा। कूना उसके कँधों पर पैर रखे बोलू के साथ-साथ खिसक रही थी।

गोल चट्टान के नीचे खोह जैसी जगह थी। आसपास की सारी ढलान इस खोह की तरफ थी। पानी गिरता होगा तो आसपास का पानी इकट्ठा होकर इस खोह के अन्दर चला जाता होगा। अभी बरसात के दिन नहीं थे। गरमी के दिनों की शुरुआत थी। बोलू और कूना उस खोह के अन्दर घुस गए। दोनों साथ अन्दर जा रहे थे, इतनी जगह थी। बहते पानी ने सैकड़ों साल में अपने जाने की जगह बनाई थी। वे दोनों सिर झुकाए पानी के रास्ते पर थे। वे पानी के रास्ते गहराई की तरफ जा रहे थे। पर यह पानी का एक सूखा रास्ता था। एक जगह आकर उनको रुकना पड़ा। उसके नीचे चट्टानों के कटाव से बना गहरा तल था। तल के अन्दर कहीं पानी के टपकने की आवाज़ थी। यह आवाज़ भूमि के अन्दर के जल के टपकने की थी। जब पानी टपकता तो उसकी गूँज होती। जैसे जल की बूँद बड़ी है या नीचे एक बड़ा सन्नाटा है। नीचे की जगह बड़ी थी। झाँकने से इसका रंग-रूप तराशे आदमी की झोंपड़ी जैसा था। क्या इसके नीचे कोई और पत्थर का तराशा आदमी रहता है? ऊपर से देखने से तो इसका वास्तु प्राकृतिक लगता था। फिर भी यह जगह तराशी तो थी। दोनों की आँखें अन्दर के अँधेरे में देखने में अभ्यस्त थीं इसलिए उन्हें कुछ दिखने लगा था। अन्दर अनेक रंगों की सजावट-सी लग रही थी। एक तरफ की दीवाल जैसा हिस्सा सफेद था। दूसरे तरफ पत्थर की दीवाल हरे रंग की थी। जैसे पूरी दीवाल पन्ने की दीवाल है। देखू होता तो ठीक से देख सकता था। पर नीचे के धरातल में जगह-जगह पानी के टपकने से बने पत्थर के नुकीले भाले जैसे गड्ढे दिख रहे थे। बोलू और कूना जो अधिक झुककर देख रहे थे, पीछे हट गए। उन्हें लग रहा था कि झाँकते-झाँकते नीचे न गिर जाएँ। पानी के रास्ते से होकर बारिश के दिनों में जहाँ मोटी धार गिरती थी, वहाँ एक चौकी जैसे पत्थर पर छोटा-सा पत्थर रखा था। बोलू और कूना, दोनों ने यह भी ध्यान दिया कि पानी की गिरती भारी मोटी धार, अपनी बरसों की ताकत से उसे हिला नहीं पाई थी। कहीं यह वही छोटा पत्थर न हो जो सबसे छोटा और सबसे वज़नदार है! तभी बोलू और कूना ने आश्चर्य से देखा कि कहीं से आकर सूर्य के प्रकाश का एक पतला स्तम्भ उसके ऊपर था। फिर थोड़ी देर बाद वह प्रकाश का स्तम्भ किरणों के रूप में उसी पत्थर पर फैल गया। एक गुच्छा किरणों का उसके ऊपर था। इस दृश्य को देखकर दोनों मोहित थे।

अब कूना का मन होने लगा था कि वह नीचे उतरने की कोशिश करे। गिरते शहर के प्रवेश मुख से वह सबसे पहले उतरी थी। अपने सब मित्रों से वह दुबली-पतली थी।

कूना ने कहा, “बोलू, मेरा मन उस छोटे-से पत्थर को छूकर देखने का हो रहा है।”

बोलू ने मना किया। पर उसका भी मन था कि वह नीचे उतरे। पर नीचे बहुत उतरना था जो आसान नहीं था। गिर गए तो पत्थर के भालों के ऊपर गिरने का डर था। उन्होंने सोचा देखू और सबके साथ आना ठीक होगा। कूना को लग रहा था कि इस बीच कोई दूसरा इस गुफा को न देख ले। आसपास पानी के रास्ते से दूर छोटे-छोटे गोल पत्थर थे। बोलू के साथ उसने तय किया कि पानी के इस रास्ते के मुख को इन गोल पत्थरों से ढँक देंगे। किसी और की नज़र न पड़े। कूना को यह भी लग रहा था कि सबको बताने से पहले भैरा इस जगह को न देख ले। वह अकेले घूमता था। अपनी बड़ाई के लिए वह इस खोज को अपनी खोज बता देगा। पेंसिल टहनी की जानकारी भैरा को बहुत पहले से थी। पर उसने किसी को बताया नहीं था। जो उन्हें बाद में मालूम हुआ।

वे इधर-उधर से गोल पत्थर इकट्ठा कर गुफा के द्वार को बन्द करने लगे। उन्होंने काफी हद तक उसे एकबारगी नज़र से छुपाने लायक छुपा दिया। वे लौटने के लिए नीचे उतरने लगे।

आज का दिन बहुत बचा था। वे सबसे पहले देखू को देखने गए। इसके बाद एक-एककर सब बहुत जल्दी इकट्ठे हो गए। भैरा हमेशा की तरह उत्साहित था। ऐसे

मौके में उसके उत्साह में कुछ अलग कर देने का विश्वास था। भैरा को छोड़कर सब एक साथ गोल चट्टान की तरफ जा रहे थे। भैरा ने कुछ दूर हटकर, उनसे अलग रास्ता पकड़ा था और वह सबसे आगे था। वह सबसे पहले गोल पत्थर के नीचे पहुँच गया। गोल पत्थर के चारों तरफ वह घूमना चाहता था और देख रहा था कि गुफा का द्वार कहाँ है। कूना और बोलू ने सारी बातें मित्रों को बता दी थीं। कूना ने ही बताने की पहल की थी।

भैरा को यदि गुफा का द्वार दिख जाता तो वह सबसे पहले नीचे उतरने की कोशिश भी करता पर गुफा के द्वार की तरफ उसकी नज़र नहीं पड़ी।

काले बादल घिर आए थे। ऐसा बिल्कुल नहीं लग रहा था कि पानी गिरेगा। पानी गिरने का मौसम भी नहीं था। ज़ोर की हवा चलने लगी थी। हवा में ठण्डापन था और होनेवाली बारिश की महक भी थी। अचानक बिजली चमकने लगी। बादल गरजने लगे। और एकाएक बहुत ज़ोर की हवा के साथ बेमौसम तेज़ बौछार होने लगी। सब किसी न किसी चट्टान की छाया में अपने को भीगने से बचाने की कोशिश कर रहे थे।

इकट्ठे पानी के साथ चट्टानों के बीच अनेक धाराएँ बहने लगी थीं। ऊपर की छोटी धाराएँ इकट्ठा होकर गुफा के मुख की तरफ मुड़ गई थीं। भैरा, जो गुफा के द्वार के बिलकुल पास था, ने देखा कि एक मोटी धार उसके तरफ आ रही है जो पहले बहुत पतली थी। भैरा उस जगह से हट गया। और दूसरी जगह ढूँढने लगा जहाँ वह बरसते पानी से सुरक्षित रहे। अनेक धाराओं से मिलकर बनी पानी की उस मोटी धार ने कूना के जमाए हुए छोटे-छोटे पत्थरों को एक साथ ढकेलकर गिरा दिया। पत्थरों के गिरने की गूँज बहुत तेज़ थी। सारे पत्थर पानी के धक्के से गिर चुके थे। ये पत्थर ज़रूर पत्थर की चौखट पर रखे गोल पत्थर पर गिरे होंगे! और गोल पत्थर टुकड़ों में बदल चुका होगा। या बहकर बच गया हो!

पानी थोड़ा कम हुआ था। पर पानी कब तक गिरेगा इसका भरोसा नहीं था। सबको अपने-अपने घर पहुँचने की जल्दी थी। पानी के गिरने ने उनके इस खोजी अभियान को स्थगित कर दिया था।

वे पूरी तरह भीग चुके थे। सम्भलकर उतरने लगे थे। पानी झिर-झिर बरस रहा था। फिर बन्द हो गया।

पानी के बन्द होते ही बौना पहाड़ के पत्थरों की ऊपरी सतह सूखने लगी। असल में पत्थर पहले धूप से गरम थे। चारों तरफ के पानी का तेज़ पहाड़ी बहाव धीमा हो चुका था। थोड़ी देर बाद पानी कहीं नहीं दिखा। इधर-उधर गड्ढों में भरा दिखाई दे रहा था।

कूना ने फ्रॉक के नीचे के हिस्से को निचोड़ा। यह देखकर बच्चों ने अपनी कमीज़ उतारकर निचोड़नी शुरू कर दी। कमीज़ को झटकारते और लहराते हुए वे उसे सुखाने की कोशिश करने लगे।

पानी की मोटी धार से जो पत्थर गिरे थे, उसकी गूँज को बोलू और कूना समझ गए थे।

पता नहीं क्यों बोलू के मन में हरे रंग की दीवाल की याद आने लगी थी! उसे लग रहा था कि पत्थर को तराशकर वहाँ एक रिहायशी तहखाना बना है। वहाँ कौन रहता होगा? यह सोचकर अचानक उसने ऊपर पीछे मुड़कर देखा। गोल चट्टान के ऊपर एक आदमी खड़ा था। क्षण भर में वह चला गया। पर बोलू इसके बाद भी वहीं खड़ा रहा कि दिखा आदमी फिर दिख जाए। पर ऐसा हुआ नहीं। बोलू को देखकर सब ऊपर की तरफ मुड़कर देखने लगे थे, पर उन्हें कोई नहीं दिखा।

जारी...

चित्रः हबीब अली

जगहों के नाम

जब हम किसी जगह को
नाम में बदल देते हैं
जैसे धूपगढ़
जैसे रजत प्रपात
या फिर हाण्डी खोह
तो हम अपनी आँखें
बस वहीं के लिए बचाकर चलते हैं
रास्ते में
साल के फूल महकते हैं –
व्यर्थ।
पक्षी की छाया घास पर उड़ती है –
व्यर्थ।
जंगल-पहाड़ से होते हुए
हम केवल एक नाम तक पहुँचते हैं।

– तेजी ग्रोवर

चित्रः सुजाशा दासगुप्ता

चकमक कविता कार्ड पढ़ो
और फिर चाहो तो अपने दोस्त को
इसी कार्ड के दूसरी तरफ
एक चिट्ठी लिखकर भेज दो ।

कविता कार्ड के चार गुच्छे। हर एक गुच्छे में बारह कविताएँ। एक की कीमत है सिर्फ पचास रुपए। मँगाने के लिए तुम चकमक के पते पर लिख सकते हो। या हमें फोन कर सकते हो। या चाहो तो सीधे ऑनलाइन मँगा सकते हो http://www.pitarakart.in पर।

मेरा पन्ना

रोटी

पूजा वर्मा, नौवीं, विंध्यवासिनी हायर सेकण्डरी स्कूल, मालाखेड़ी, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश

रोटी

रोटी रोटी रोटी है मोती जैसी रोटी
गोल-गोल रोटी है, मोती जैसी रोटी
फूली-फूली रोटी है पपड़ी वाली रोटी
छोटी-छोटी रोटी है ऐसी मेरी रोटी

अमीर की रोटी

जो दौलत का घमण्ड है करता
जिस पर इतनी शान है दिखलाता
असल में तो वह गरीब की छीनकर
खाता है रोटी

दयालु

जो धन धान से परिपूर्ण है
जिसके पास घमण्ड की न एक बूँद है
जो इंसानियत को समझता है
वह दान में कर देता है रोटी

राजा को भी गुलाम बना दे
ऐसी है ये रोटी
अमीर को भी नचा देती है रोटी

आम आदमी की रोटी

आम आदमी घर से सोचकर यह निकलता है
पता नहीं मिलेगी कि नहीं आज की रोटी
पूरी रणनीति तैयार करके चलता है
इस काम को करने से
इतनी मेहनत करने से मिल जाएगी रोटी
सुबह होती ही निकल जाता है
कमाने आज की रोटी

चोर

दिनभर घूमता रहता है और ढूँढता रहता है
किसके घर है ज़्यादा और कहाँ छिपाई है रोटी
यही सोचता-फिरता है
किस गली से जाना है
कैसे इसे चुराना है
कितना कुछ इससे करवाती है रोटी
बेचारा दिनभर घूमता और रात में जागता
तब कहीं इसे दर्शन देती है रोटी

आलसी

जिसे मेहनत से पीछा छुड़ाना है
काम बिलकुल भी है नहीं कर पाना
बस न चले नहीं तो कहने लगे
कोई चबाकर खिला दो रोटी

गरीब

गरीब के लिए तो ख़ज़ाना है रोटी
अगर मिल जाए दो वक्त की रोटी
तो जैसे मिल गए हो हीरे-ज़वाहरात और मोती
रोते हुए को हँसाती भूखों को तृप्त करती है रोटी
अगर मिल जाए पेटभर रोटी
तो दुनिया भी लगती है छोटी

एक पहर मिलती है जिसे रोटी वह यह सोचता
क्या करूँ ऐसा जो फिर से मिल जाए रोटी
कितनी कीमती होती है रोटी
सभी की ज़रूरत होती है रोटी
किसी के पास जाती है और किसी के पास नहीं
जा पाती रोटी

जिसको नहीं मिल पाती है रोटी
वह किस्मत को कोसता फिरता है
अगले जन्म में कोई पाप किए होंगे
बस यही सोचता फिरता है
अब क्या है कहानी खत्म
अब आप जाकर खाओ अपनी रोटी
और ज़रूरतमंदों को भी खिलाओ रोटी।

चित्र: मिस्बाह खान, छटी, माउंट कार्मल स्कूल भोपाल, म. प्र.

आँखों देखी

बिल्ली की करामात

जब मैं छोटा था तो मेरी बहन मुझे राखी बाँध रही थी कि तभी एक बिल्ली आई और प्लेट से एक रसगुल्ला लेकर चली गई। मेरी बहन उसे मारने के लिए डण्डा लेकर दौड़ी। बिल्ली भाग गई और देहरी के पीछे छुप गई। जब बाहर निकली तो मेरी बहन उसकी कमर पर एक डण्डे से मार दी। वह अपनी पूँछ सिकुड़ाती हुई बहुत तेज़ी-से भागी। वह अब भी मेरे घर में कभी-कभी आती है।

-रोशन कुमार, छटी, भवराजपुर, सिवान, बिहार

एक बार मैं मेरे पापा, मम्मी, बहन संतुष्टि, दीदी, बड़े पापा, बड़ी मम्मी के साथ सिंहस्थ में गई थी। हम सब रामघाट में नहा रहे थे। मेरी बहन छोटी थी इसीलिए उसको पानी के ओटले पर बैठाया था। तभी अचानक वो अपने पैर हवा में उड़ाने लगी तभी अचानक वो पानी में डूब गई। बेचारी 2-3 मिनट वहीं रही| तभी मेरे पापा की नज़र पड़ी। उन्होंने उसे उठाकर वापस ओटले पर बैठाया और जब वह बाहर निकली तब वह कुछ अलग ही महसूस कर रही थी। तभी यह बात मम्मी को पता चली और मम्मी ने उसे अपने पास ऊपर वाले ओटले पर ही बैठाया।

-श्रद्धा बावस्कर, चौथी, सेक्रेड हार्ट स्कूल, देवास, मध्यप्रदेश

मेरी आपबीती

मेरे पापा रोज़ शराब पीकर आते। तब मेरे घर में रोज़ लड़ाई-झगड़ा होता था। मैं अपने पापा को बहुत मना करती। लेकिन वो नहीं मानते। एक दिन मेरे पापा को बहुत बुखार आया। आते ही रहा। धीरे-धीरे मेरे पापा के पेट में दर्द होने लगा। तभी पता चला कि मेरे पापा की किडनी खराब हो गई थी। इसी से मेरे पापा खतम हो गए। मैं और मेरी मम्मी बहुत रोए थे। अब भी मुझे अपने पापा की याद आती है।

-हिमांशी धीमान, चौथी, प्राथमिक विद्यालय,
मोहनलाल गंज, उत्तर प्रदेश

मेरा बस्ता

मेरा बस्ता, मेरा बस्ता
यह पुस्तकवाला गुलदस्ता
इसके भीतर भारी सरसता
क्यों हो मेरी हालत खस्ता

इसमें मेरी पुस्तक-कॉपी
इसमें मेरे कंचे-टॉफी
इसमें मेरी पूरी चीज़ें
हैं यह सभी ज़रूरी चीजें

होने देतीं इसे ना भारी
हम हैं मैडम के आभारी

-खुशबू/रामबदन, छटी, दीपालया (फाडा), दिल्ली

चित्रः अरिन्दम बसु, कोलकाता बाल भवन, पश्चिम बंगाल

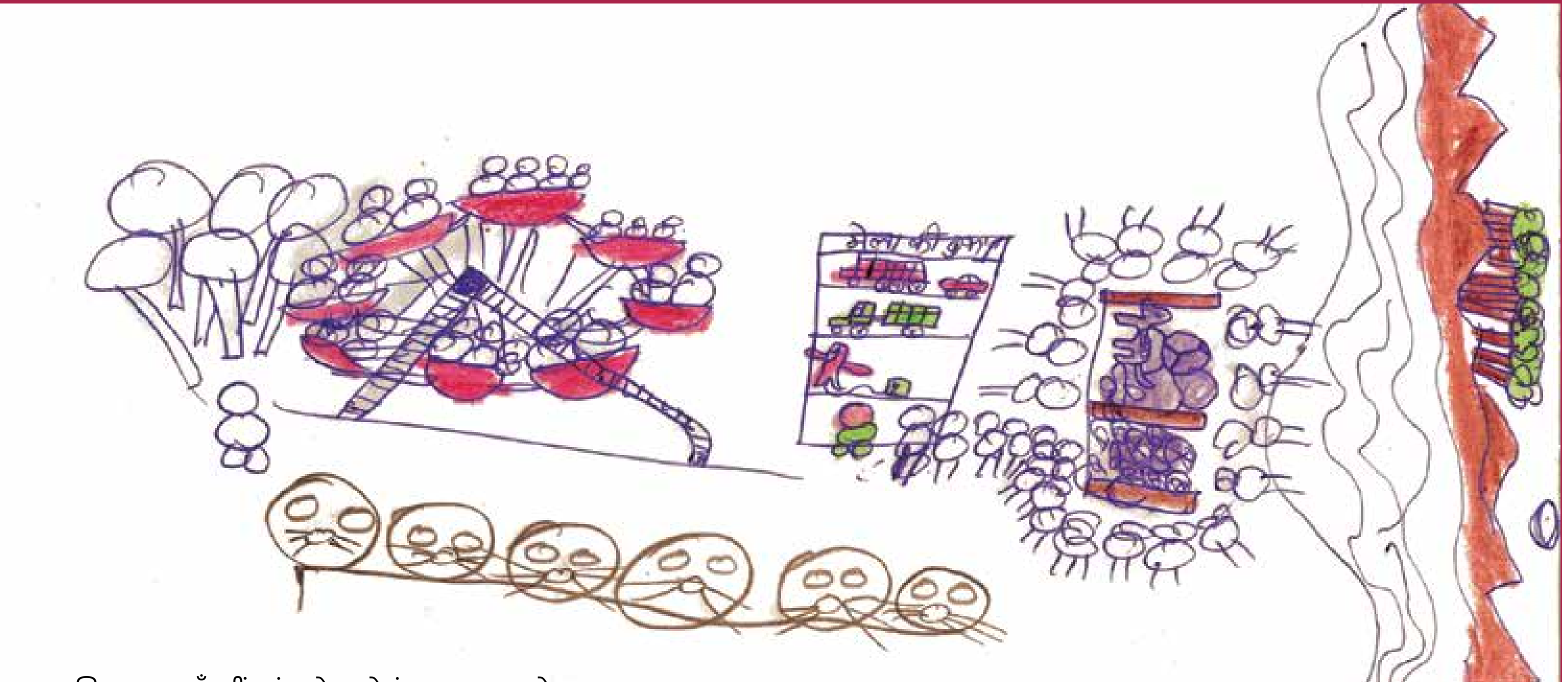

चित्र: तारा, पाँचवीं, सांगाखेड़ा, होशंगाबाद, मध्यप्रदेश

भूल-सुधार (अप्रैल अंक 2018)

पेज 25 *गणित है मज़ेदार*

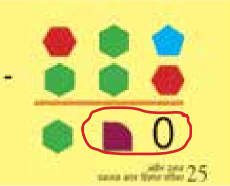

2. दूसरे चित्र में शून्य और भूरे रंग (चॉकलेट रंग) की आकृति एक दूसरे की जगह पर हैं।

यानी कि आखिर में हरे हैक्सागॉन के बाद शून्य आएगा और फिर भूरे रंग की आकृति। ऐसे...

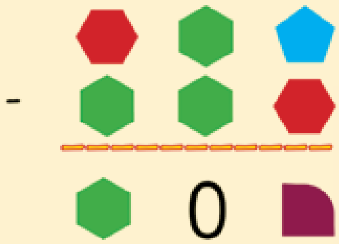

पेज 38 *जवाब: गणित है मज़ेदार*

1. जवाब 3 नहीं 7 है।

3. आखिर में दिए गए वाक्य में अधिक के बजाय कम होना चाहिए - "यानी अगले चरण का उत्तर पाने के लिए सवाल में व्यक्तियों की जितनी संख्या दी गई है उससे एक कम संख्या को पिछले चरण के उत्तर में जोड़ दो।"

परीक्षा, नींद, बुखार और रतजगा

इस आलेख में बात किए गए एक बच्चे का नाम दीपेन्द्र नहीं देवेन्द्र राजौरिया है।

पप्पू - "यार, मेरे पापा बहुत डरपोक हैं।"
दोस्त - "कैसे?"
पप्पू - "जब भी रोड क्रॉस करते हैं तो मेरा हाथ कसकर पकड़ लेते हैं, और बोलते हैं छोड़ना मत।"

चुटकुले संकलन- कार्तिक आभास

चित्र: शुभम लखेरा

D-11025/18
14/03/2018
विज्ञापन
प्रदेश के किसानों के लिये
उत्सव का दिन
मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान
10.21 लाख किसानों को आज देंगे
1,669 करोड़ रुपये का तोहफा
मुख्यमंत्री करेंगे सीधे किसानों के बैंक खातों में भुगतान
श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
श्री शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश
रबी 2016–17 में उपार्जन में बेचे गेहूं तथा
खरीफ 2017 में उपार्जन में बेचे धान पर
200 रुपये प्रति क्विंटल प्रोत्साहन राशि का भुगतान।
मुख्यमंत्री कृषक समृद्धि योजना
किसान महासम्मेलन
16 अप्रैल, 2018
दोपहर 1.00 बजे
शाजापुर
सभी जिलों में
किसान सम्मेलनों के
आयोजन में सुना जायेगा
मुख्यमंत्री का उद्बोधन
सबकी खुशहाली, सबका विकास – मध्यप्रदेश सरकार
कार्यक्रम का प्रसारण दूरदर्शन मध्यप्रदेश, सभी प्रादेशिक टी.वी. चैनल्स, सभी एफएम चैनल्स एवं सोशल मीडिया पर।
/CMMadhyaPradesh
/CMMadhyaPradesh
मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी
आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2018

माथापच्ची

फटाफट बताओ कि

बेज़ुबान फिर भी मैं बोलूँ,
सारी दुनिया दिल पे ढो लूँ
मैं लोगों का दिल बहलाता,
बतलाओ मैं क्या कहलाता ?

(टीवी)

वह क्या है जो तुम्हारे पास जितना ज़्यादा हो तुम्हें उतना ही कम दिखाई देता है?

छोटे-से घर में करूँ निवास
ना कोई खिड़की ना किवाड़
आना हो जो बाहर मुझको
दीवार पर करूँ मैं वार..

(अण्डे से निकला चूज़ा)

एक फूले हुए गुब्बारे को पानी में तैराना ज़्यादा आसान होगा या डुबाना?

एक पुल की चौड़ाई सिर्फ इतनी है कि एक बार में एक ही ट्रक आ सकता है या जा सकता है, दो ट्रक वाले आमने-सामने आ जाते हैं। अब वो पुल को कैसे क्रॉस करेंगे?

नीचे एक ऑफिस का नक्शा दिया गया है जिसमें छह लोगों के केबिन दिखाए गए हैं। बेनी और चार्ली दोनों के केबिन गलियारे के दाईं ओर हैं। अनीशा का केबिन गलियारे के बाईं ओर है। इरा और फियोना के केबिन गलियारे की विपरीत दिशाओं में हैं लेकिन आमने-सामने नहीं हैं। चार्ली और डॉली के केबिन आमने-सामने हैं। इरा का केबिन कोने में नहीं है। फियोना व अनीशा का केबिन एक ही तरफ है लेकिन प्रवेश द्वार से फियोना का केबिन अनीशा से ज़्यादा दूरी पर है। क्या तुम बता सकते हो कि किसका केबिन अनीशा के केबिन के सामने है?

तुम्हारे पास तीन डण्डियाँ हैं। क्या तुम इन्हें तोड़े बिना चार बना सकते हो?

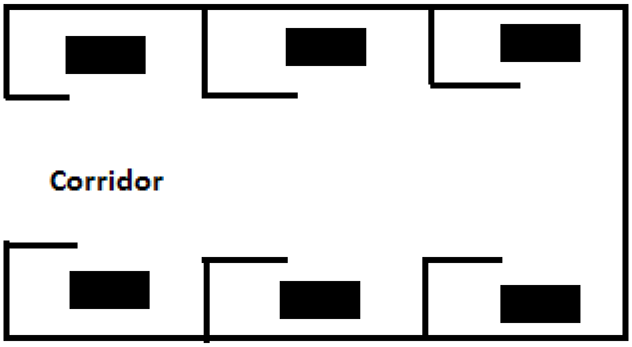

इदा ने गलती से कुछ उबले हुए अण्डों को कच्चे अण्डों के साथ एक ही प्लेट में रख दिया है। अण्डों को बिना तोड़े उसे यह पता करना है कि कौन-सा अण्डा कच्चा है और कौन-सा उबला। क्या तुम उसकी कुछ मदद कर सकते हो?

सुडोकू-7

		3		2	
1					
			5		4
	5				
4			6		
		2		1	

सुडोकू

दिए हुए बॉक्स में 1 से 6 तक के अंक भरना। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय हमें यह ध्यान रखना है कि 1 से 6 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, बॉक्स में तुमको छह डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि उन डब्बों में भी 1 से 6 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन नहीं है करके तो देखो, जवाब अगले अंक में तुमको मिल जाएगा।

जवाब: गणित है मज़ेदार

1.

तुमने ध्यान दिया होगा कि इस तिकोने संख्या जमाव में कई पैटर्न हैं। जैसे कि हर लाइन की संख्याओं का जोड़ पिछली लाइन के जोड़ का दुगना है। यह भी कि अगर हम किसी संख्या तिकोन को देखें तो पाएँगे कि नीचे की संख्या ऊपर की दो संख्याओं का जोड़ है। जैसे 1 + 2 = 3, या 3 + 1 = 4 ।

इसी क्रम में 3 + 3 = 6 होगा। यानी जो लाल लकीर वाली जगह है वहाँ केवल 6 ही भरा जा सकता है।

अब अगली लाइन को भरो।

पहली संख्या तो 1 ही होगी। दूसरी संख्या का मान होगा 1 + 4 = 5, तीसरी संख्या होगी 4 + 6 = 10 ।

बाकी की तीन तो अब तुम खुद ही भर सकते हो।

इसी तरह एक-दो लाइनें और बढ़ाओ और देखो कि क्या पैटर्न बन रहे हैं।

जैसे कि हमने पहले ही बताया था कि इस तिकोन से कई सारे पैटर्न बनते हैं। एक तो हम देख ही चुके हैं कि हर लाइन का जोड़ पिछली लाइन का दुगना है (1, 2, 4, 8, 16, 32...)।

अब अगर तिरछी लाइन देखें तो पहली लाइन तो 1,1 वाली है। दूसरी तिरछी लाइन 1, 2, 3, 4, 5,... इस क्रम में है। तीसरी तिरछी लाइन का पैटर्न है 1 + 2 = 3, 3 + 3 = 6, 6 + 4 = 10,... यानी पिछली संख्या से 2, 3, 4, 5 के क्रम में जोड़ते जाएँ। अब चौथी तिरछी लाइन का पैटर्न तुम खुद ही पता करो।

इस तरह तुम सीधी, आड़ी और तिरछी लाइनों को बनाकर नए-नए पैटर्न खोज सकते हो।

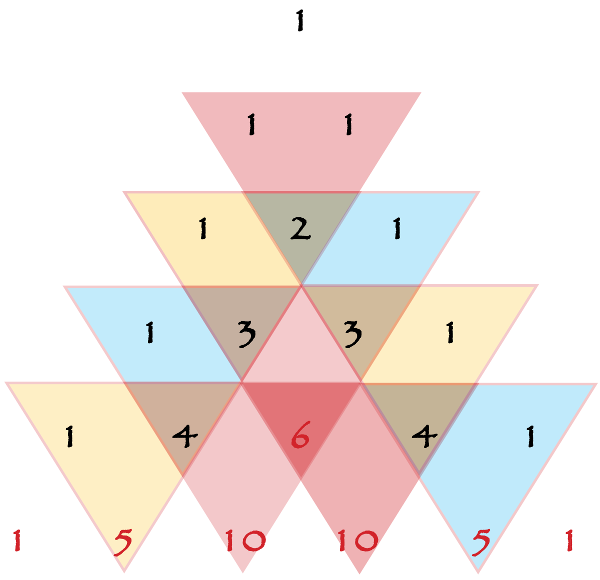

2.

परिवार

चार बच्चे हैं (दो लड़के और दो लडकियाँ) (4)

उनके माता-पिता (2)

उनके दादा-दादी (2)

यानी कुल आठ लोग।

यह सही है कि नहीं पहेली से जाँच लो।

सुडोकू-6 का जवाब

1	6	4	2	5	3
5	2	3	1	4	6
6	3	2	4	1	5
4	1	5	3	6	2
2	4	6	5	3	1
3	5	1	6	2	4

चित्र पहेली
बाएँ से दाएँ
ऊपर से नीचे
2 22 4 25 19 18 4 1 21 10 13 1 11 16 27 JUNE 5 16 8 7 14 3 22 11 23 6 9 17 12 24 20 21 15 12
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/261/2018-20

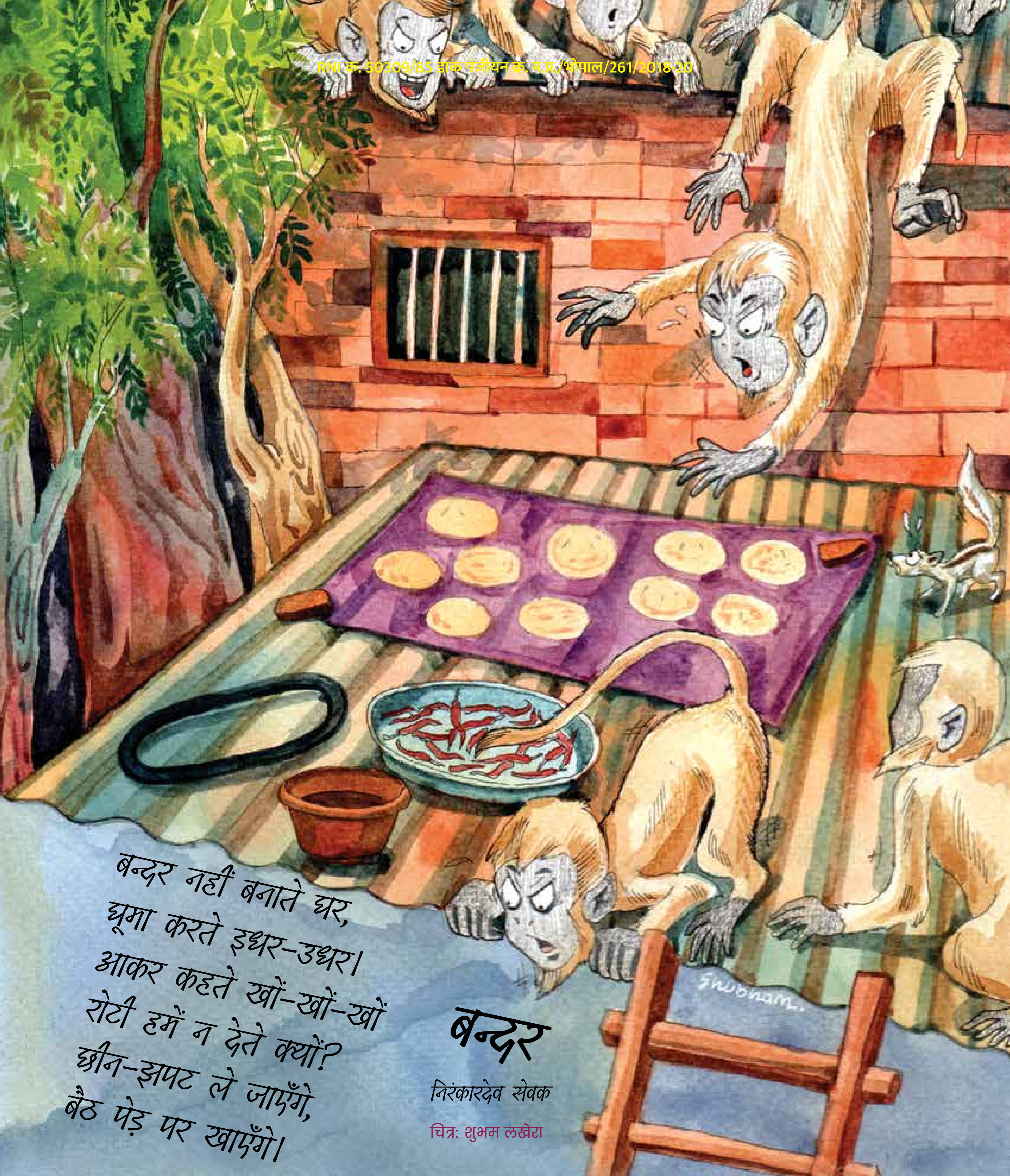

बन्दर

निरंकारदेव सेवक

चित्र: शुभम लखेरा

बन्दर नहीं बनाते घर,
घूमा करते इधर-उधर।
आकर कहते खों-खों-खों
रोटी हमें न देते क्यों?
छीन-झपट ले जाएँगे,
बैठ पेड़ पर खाएँगे।

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म.प्र. से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन